अगस्त 2012

दादावाणी

मूल्य: ₹ १०



अतिक्रमण से पाप बँधते है और प्रतिक्रमण से पाप खतम हो जाते है। वापस लोटने से पाप नाश होते है। कर्म का नियम क्या है? माफी माँगना वही कर्म का नियम है। अतिक्रमण करते हो, उसके प्रतिक्रमण करने चाहिए।



तंत्री : डिम्पल महेता
वर्ष : ७, अंक : १०
अखंड क्रमांक : ८२
अगस्त २०१२

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Editor : Dimple Mehta

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'काम निकाल लो', प्रतिक्रमण से

संपादकीय

मनुष्य-जीवन के व्यवहार में ऐसी एक सामान्य प्रणाली है कि कपड़ों पर दाग़ लगे तो उसे धो लेना है। ऐसा किसलिए? तो कहे, कपड़ों को दाग़ रहित करने के लिए। व्यवहार की यह रीत गलत नहीं है। लेकिन वहाँ पर मनुष्य जितना जागृत रहता है, उतना ही जागृत क्या खुद के अंदर 'अतिक्रमण' से लगनेवाले दाग़ को धोने के लिए होता है? ऐसे अतिक्रमण से लगनेवाले दाग़ के असर और उनसे मुक्त होने का सरल उपाय अनुभवी ज्ञानी के अलावा और कौन दिखा सकता है? ये अतिक्रमण, खुद के और दूसरों के जीवन में उद्‌भव होनेवाले दु:ख का कारण है, और मोक्ष की ओर जाने में बीच में *अंतराय* रूप हैं। इस हक़ीकत को परम पूज्य दादा भगवान ने ज्ञान में देखकर, सभी के कल्याण के लिए अत्यंत करुणा की और सरलता से समझ में आए, ऐसा आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याखान का सिद्धांत दिखाया है। जिसके द्वारा मोक्षमार्ग का प्रवासी अतिक्रमण रूपी दाग़ में से संपूर्ण मुक्त होकर, मनुष्य जीवन सार्थक करके मोक्ष पाने के ध्येय को सिद्ध कर सके।

मनुष्य के जीवन में पूर्व उपार्जित कर्मों के उदय के टाइम भूल या दोष हो जाते हैं। भूल या दोष होना वह गलत है ऐसा उसकी समझ में आए, तब से उसकी वापस लौटने की शुरूआत होती है। यहाँ दादाश्री प्रतिक्रमण का सिद्धांत समझाते हुए कहते हैं कि, जब से खुद को अपनी भूल समझ में आती है और भूलों के लिए पछतावा करता है, प्रतिक्रमण करता है, यानी तब से उसका अभिप्राय बदलता है। अभिप्रायों से कर्म बँधते हैं और यदि समकित प्राप्त हुआ हो तो वही अभिप्राय बदल देने से कर्म में से छूट सकते हैं। और प्रत्याखान करें, शक्ति माँगे तो भगवान के लिए परम विनय उत्पन्न होता है और इसलिए उसे शक्ति सहज ही मिलती रहती है। उस शक्ति के आधार पर उसका अपना निश्चय मज़बूत होता है और ऐसा करते-करते संपूर्ण दोष मुक्त हो सकता है। ऐसी ज़बरदस्त शक्ति इस आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याखान के विज्ञान में है। यह विज्ञान साइन्टिफिक है इसलिए यथार्थ काम करता है। यह विज्ञान तुरंत ही फल देता है। 'दिस इज़ दी केश बैंक ऑफ डिवाइन सोल्यूशन।'

अक्रम मार्ग में आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद व्यवहार *निकाली* है। व्यवहार वह क्रमण है। वो अगर सहजता से होता रहे तो हर्ज नहीं है, लेकिन आग्रह, अभिप्राय, कषाय, विषय वगैरह संयोग के असर से अतिक्रमण हो जाते हैं। उन अतिक्रमण के प्रतिक्रमण जब तक नहीं हुए तब तक इस जग से कैसे छूट सकते हैं? दादाश्री कहते हैं कि अपना ध्येय अब एकावतारी होने का (और एक ही जन्म लेने का), तो फिर कषाय-विषय के दोषों के आगे अजागृत रहने से कैसे चलेगा? कदम-कदम पर जागृति रहनी चाहिए। हमारे अंदर क्रोध-मान-माया-लोभ के कषाय हैं वे ही भूल करवाते हैं और कर्ज़ चढ़ता है। लेकिन उसके सामने तुरंत ही प्रतिक्रमण करके चोखा कर लेना है। वास्तव में प्रतिक्रमण तो शूट ऑन साइट (दोष होते ही तुरंत धो डालना) होना चाहिए, दोष उत्पन्न होते ही प्रतिक्रमण कर लें तो निबेड़ा आएगा। अपना ध्येय तो अब निबेड़ा लाना, यही है न? इसलिए पाँच आज्ञा और प्रतिक्रमण ही मुख्य साधन हैं, कि जिसके द्वारा खुद के ध्येय को सिद्ध कर सकते हैं, ऐसा है।

दादाश्री सभी के लिए करुणा से भरी कल्याण की भावना से कहते हैं कि बार-बार ऐसा योग प्राप्त होता नहीं। यह तो अपवादात्मक केस है कि इस काल में ऐसा योग प्राप्त हुआ है और वास्तव में यह अक्रम विज्ञान की ही बलिहारी है, इसलिए अब काम निकाल लेने जैसा है। कहने का तात्पर्य इतना ही है कि अब जब यह अलभ्य (दुर्लभ) वस्तु प्राप्त हुई है, तो फिर इसका संपूर्ण लाभ उठा लो, अपना सर्वस्व लगाकर काम निकाल लो।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'काम निकाल लो', प्रतिक्रमण से

प्रतिक्रमण निकाले, अतिक्रमण के दाग़

दादाश्री : चाय का दाग़ आपके कपड़े पर लगे तो आप क्या करते हो?

प्रश्नकर्ता : तुरंत ही धो लेता हूँ।

दादाश्री : वहाँ पर आप कितने चौकस रहते हो! क्योंकि आपको लगता है कि दाग़ रह जाएगा, इसलिए तुरंत ही वहाँ उसी क्षण धो डालते हो, लेकिन 'भीतर' दाग़ लगते हैं उसका पता ही नहीं है! अतिक्रमण अर्थात् दाग़ लगना और प्रतिक्रमण अर्थात् दाग़ निकालना। जिसे दाग़ नहीं लगता उसे प्रतिक्रमण की ज़रूरत नहीं है, 'ज्ञानीपुरुष' को प्रतिक्रमण की ज़रूरत नहीं है।

ये सभी, चाय का दाग़ लगे कि तुरंत ही धो लेते हैं, वहाँ पर ज़रा भी कमज़ोर नहीं पड़ते, वहाँ पर ज्ञानी ज़रा कमज़ोर पड़ जाते हैं, जब कि ज्ञानी भीतर के दाग के प्रति कमज़ोर नहीं होते। 'ज्ञानीपुरुष' को दाग़ ही नहीं लगते, क्योंकि खुद गाकर गवाते हैं, जब कि दूसरे लोग तो गवाते हैं किन्तु खुद नहीं गाते, इसलिए दाग़ लग जाता है। चाय का दाग़ लगे और पता नहीं हो कि किस चीज़ से धोना है, तो क्या होगा? उसे दूध में भिगोए तो दूध का दाग़ लग जाता है और फिर से तेल में भिगोकर निकालने जाएँ तो वो दाग़ और भी पक्का हो जाता है। बाहर के लोग (जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है) आजकल कैसा प्रतिक्रमण करते हैं? द्रव्य आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करते हैं। भाव आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान तो कोई करता ही नहीं है! हाँ, दाग़ लगा तो क्या वहाँ भाव प्रतिक्रमण करते हैं? प्रतिक्रमण तो तब किया कहलाए कि दाग़ लगे कि तुरंत ही खुद धो डाले। लेकिन ये तो महीने तक दाग़ नहीं निकालते, उस दाग़ को पक्का होने देते हैं, उसके बाद धोने जाएँ तो क्या वो दाग़ आपकी राह देखकर बैठा रहेगा? नहीं, वो दाग़ तो पक्का ही हो जाएगा!

किसीको ऊँची आवाज़ में कुछ कह दिया और इससे सामनेवाले को दु:ख हुआ, तो भीतर प्रतिक्रमण कर लेना पड़ता है। क्योंकि, यह अतिक्रमण हुआ, इसलिए अतिक्रमण का प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

भगवान ने कहा है कि आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान के अलावा दूसरा कोई व्यवहार धर्म है ही नहीं। लेकिन वह केश (रोकड़ा) होना चाहिए, उधार नहीं चलेगा। किसीको गाली दी, तो अभी जो हुआ उसे लक्ष्य में रखो, कि किसके साथ क्या हुआ, और फिर आलोचना करके, रोकड़ा प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान कर लो। इसे भगवान ने व्यवहार-निश्चय दोनों कहा। लेकिन ऐसा कौन कर सकता है? समकित होने के बाद कर सकते हैं, तब तक करना चाहें तो भी नहीं होता। मगर यों ही समकित होता भी नहीं है न! फिर भी हमारे यहाँ से कोई आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान सीख जाए, तो भी काम निकाल लेता है। भले ही बिना ज्ञान लिए सीखकर जाए तो भी हर्ज नहीं है। समकित (अपने आप) उसके सामने आकर खड़ा होगा!

प्रतिक्रमण की रीत

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण में क्या करना है?

दादाश्री : मन-वचन-काया के योग, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म, चंदूलाल और चंदूलाल के नाम की सर्व माया से अलग ऐसे 'शुद्धात्मा' को याद करके कहना है कि, 'हे, शुद्धात्मा भगवान! मैंने ऊँची आवाज़ में बोला ये भूल हो गई, इसलिए उसकी माफ़ी माँगता हूँ और ऐसी भूल दोबारा नहीं करूँगा ऐसा निश्चय करता हूँ, ये भूल दोबारा नहीं करने की शक्ति दो।' 'शुद्धात्मा' को याद किया अथवा 'दादा' को याद किया और कहा कि, 'यह भूल हो गई', अर्थात् वह आलोचना और उस भूल को धो डालना वह प्रतिक्रमण और 'वह भूल दोबारा नहीं करूँगा' ऐसा निश्चय करना वह प्रत्याख्यान है! सामनेवाले को नुक़सान पहुँचे ऐसा हो गया अथवा उसे हमारे द्वारा दु:ख लग गया, ये सारे अतिक्रमण हैं और उनका तुरंत ही आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करना पड़ता है।

सिर्फ आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान ही मोक्षमार्ग का साधन है, दूसरा कोई साधन नहीं है इस जगत् में। दूसरा साधन इतना ही है कि ज्ञानीपुरुष से ज्ञान मिले फिर ये साधन काम आएगा। निश्चयज्ञान सिर्फ ज्ञानियों के पास होता है। पुस्तक में निश्चयज्ञान नहीं होता, ज्ञानियों के हृदय में छुपा होता है। उस निश्चयज्ञान को जब हम सुनें, वाणी के रूप में सुनें तब अपना निबेड़ा आता है। वर्ना पुस्तक में तो व्यवहारिक ज्ञान होता है। वह ज्ञान भी काफ़ी खुलासे देता है। उससे बुद्धि बढ़ती है। मतिज्ञान बढ़ता जाता है। श्रुतज्ञान से मतिज्ञान बढ़ता है और मतिज्ञान फिर निबेड़ा लाता है कि पाप में से कैसे छूटा जाए! बाकी अन्य कोई उपाय नहीं है। हाँ, खुद की भावना होनी चाहिए। लेकिन यह (अक्रम विज्ञान) तो तुरंत ही फल देता है, 'दिस इज़ दी केश बैंक ऑफ डिवाइन सोल्युशन।' 'केश-बैंक' यही है! दस लाख वर्षों से ऐसी 'केश बैंक' खुली ही नहीं है! दो ही घंटों में मोक्ष ले जाओ! यहाँ पर तुम जो माँगो वह देने को तैयार हूँ। तुम माँगना भूल जाओगे।

दु:ख हुआ इसलिए पश्चाताप

प्रश्नकर्ता : पाप दूर करने के लिए प्रायश्चित के सिवा अन्य कोई उपाय है क्या?

दादाश्री : पाप दूर करने के लिए प्रायश्चित के सिवा अन्य कोई उपाय नहीं है। अपना यह विज्ञान मिलने के बाद हार्टिली (दिल से) पछतावा करे, तो भी सारे पाप जल (धुल) जाते हैं। हाँ, दूसरे लोगों के (जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया हो) पाप भी जल जाते हैं, लेकिन पूरे नहीं जलते। और अपने लिए तो ऐसा विज्ञान मिलने के बाद, वह खूब ज़्यादा पछतावा करता रहे, तो फिर पार निकल जाता है!

सौ प्रतिशत सही रास्ता

प्रश्नकर्ता : मतलब क्या माफ़ी माँग लेने से अपने पाप का निवारण हो जाता है?

दादाश्री : उसीसे पाप का निवारण हो जाता है। और कोई रास्ता ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर बार-बार माफ़ी माँगे और बार-बार पाप करता रहे?

दादाश्री : बार-बार माफ़ी माँगने की छूट है। बार-बार माफ़ी माँगनी पड़ती है। हाँ! सौ प्रतिशत सही रास्ता है! इस जगत् में माफ़ी माँगने के अलावा अन्य किसी भी रास्ते से छूट ही नहीं सकता। प्रतिक्रमण से सारे पाप धुल जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने से पाप नाश होते हैं, उसके पीछे क्या साइन्स (विज्ञान) है?

दादाश्री : अतिक्रमण से बंधते हैं और प्रतिक्रमण से पाप नाश होते हैं। यानी, वापस लौटने से पाप नाश होते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर कर्म का नियम कहाँ लागू होता है? हम माफ़ी माँगे और कर्म छूट जाएँ, तो फिर उसमें कर्म का नियम रहा ही नहीं न?

दादाश्री : यही कर्म का नियम! माफ़ी माँगना यही कर्म का नियम! कर्म का नियम क्या है? अतिक्रमण करो तो उसका प्रतिक्रमण करो। आपकी समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : फिर तो सभी, पाप करते रहेंगे और माफ़ी माँगते रहेंगे।

दादाश्री : हाँ, पाप करते जाना और माफ़ी माँगते जाना, भगवान ने यही कहा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सच्चे मन से माफ़ी माँगनी है न?

दादाश्री : माफ़ी माँगनेवाला सच्चे मन से ही माफ़ी माँगता है। और अगर झूठे मन से माफ़ी माँगे, तो भी चलेगा, किन्तु माफ़ी माँगना।

प्रश्नकर्ता : फिर तो उसे आदत पड़ जाएगी!

दादाश्री : आदत पड़ जाए तो भले ही पड़ जाए, लेकिन माफ़ी माँगना। माफ़ी नहीं माँगी तो समझ लेना कि शामत आ गई! माफ़ी का अर्थ क्या है? उसे प्रतिक्रमण कहा जाता है। और दोष को क्या कहा जाता है? अतिक्रमण।

ये पाप जो हैं न, हम पाप किसे कहते हैं? जैसे कि, अभी आप जो कुछ कर रहे हो, तो उसमें किसीको हर्ज नहीं है। यहाँ सभी लोग बैठे हैं, उनमें से किसीको भी हर्ज नहीं है। मगर यदि उनमें से कोई एक व्यक्ति कहे कि, 'आप क्यों देर से आते हो?' ऐसा कहे, तो तब उन्होंने अतिक्रमण किया, ऐसा कहा जाता है। लोगों को जो पसंद नहीं आए, ऐसा बोलना उसे अतिक्रमण किया कहा जाता है।

ऐसे अतिक्रमण किए उसके लिए ही भगवान ने प्रतिक्रमण कहा है। मतलब, पश्चाताप किस बात का करना है, कि जो लोगों को पसंद नहीं आए, लोगों को दु:ख हुआ, ऐसी बाबतों के लिए पश्चाताप करना है। जो पसंद आती हों उसके लिए नहीं करना है।

इच्छा नहीं हो फिर भी कभी-कभार सामनेवाले को दु:ख हो जाए, ऐसा बोल देते हैं, तो उस घड़ी पछतावा करना। और पछतावा करके फिर ऐसा कहना कि, 'दादा भगवान, उन्हें शांति देना।'

समझाने का ही उपाय

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति भूल करे, फिर हमारे पास माफ़ी माँगे और हम माफ़ कर दें। वह माफ़ी नहीं माँगे फिर भी हम मन से माफ़ कर दें, लेकिन बार-बार वह व्यक्ति भूल करे तो हमें क्या करना है?

दादाश्री : प्रेम से जितना समझा सकें उतना समझाना है, दूसरा कोई उपाय नहीं है। और हमारे हाथ में कोई सत्ता नहीं है। हम माफ़ कर दें तो ही हमारा छुटकारा है इस जगत् में। माफ़ नहीं करोगे तो आप मार खाकर फिर माफ़ करोगे, उपाय ही नहीं है। हमें उसे समझाना है, वह बार-बार भूल नहीं करे, ऐसे भाव बदल दे तो बहुत हो गया। मनुष्य तय करे कि अब मुझे भूल करनी ही नहीं है, फिर भी हो जाती है वह अलग वस्तु है। लेकिन, करनी ही है ऐसा कहे, तो उसका अंत ही नहीं आएगा। वह तो उल्टी राहवाला मनुष्य कहलाता है। भूल करनेवाले को खुद को पछतावा हो और नहीं करूँगा ऐसा तय करे और इसके बाद फिर से भूल हो जाए तो हर्ज नहीं है। नहीं करूँगा ऐसा तय भी करता है, पछतावा भी होता है। पश्चाताप करना चाहिए, उसके बावजूद भी हो जाए तो फिर से पश्चाताप करना चाहिए।

इसका कारण क्या है? तब कहे, भूल की कई परतें हैं, प्याज़ की तरह। पछतावा करने से एक परत चली जाती है, लेकिन फिर से दूसरी परत आती है,

इसलिए प्याज़ वैसे का वैसा ही दिखता है। वो तो जब सारी परतें चली जाएँ तब खाली हो जाता है, तब तक नहीं होता। अनंत जन्मों से अपार भूलें की हैं।

फिर ज़िम्मेदारी नहीं है

प्रश्नकर्ता : हम प्रत्यक्ष में जब 'सॉरी' (गलती हो गई) कहते हैं, वो भी जब जूनियर (मातहत) व्यक्ति से कहते हैं तो उसका दिमाग आसमान पर चढ़ जाता है, कि जिसका कोई हिसाब ही नहीं है।

दादाश्री : ऐसा कुछ भी नहीं कहना है। यदि हमारे मुँह से बात निकल गई, फिर हमें पछतावा होता है या नहीं? पछतावा होता है मतलब हम प्रतिक्रमण करते हैं। फिर 'यू आर नोट रिस्पोन्सिबल एट ऑल।' आप उसके ज़िम्मेदार नहीं हो। इसलिए हमने कहा था कि इसके बाद ज़िम्मेदारी हम अपने सिर पर लेते हैं। क्योंकि आप यदि इतना (प्रतिक्रमण) करो न, तो फिर आपकी जोखिमदारी नहीं रहती। फिर उसकी वकालत करनी हमें आती है। लोकिन हमारा इतना कहा आप करो, फिर आप क़ायदे के अंदर आ गए। इसलिए फिर जो भी वकालत करनी हो वो हमें आती है। हम निपट लेते हैं। लेकिन हमारा इतना कहा करो, तो बहुत हो गया।

अर्थात् माफ़ी अवश्य माँगो। कोई गलत कर रहा हो और माफ़ी माँगता हो तो माँगने दो न! 'दिस इज़ कम्प्लीट लॉ।' (ये संपूर्ण कायदेसर है।)

कोई ब्रान्डी (दारू) पीता हो और कहे कि, 'मैं माफ़ी माँगता हूँ' तो मैं कहता हूँ कि, माफ़ी माँगना। माफ़ी माँगते जाना और पीते जाना। लेकिन मन में तय करना कि मुझे अब ब्रान्डी पीना छोड़ देना है। सच्चे दिल से मन में तय करना, फिर पीते जाना और माफ़ी माँगते जाना। एक दिन उसका अंत आएगा। मेरा यह सौ प्रतिशत का विज्ञान है। उगे बिना नहीं रहेगा (असर हुए बिना नहीं रहेगा)।

वैज्ञानिक छानबीन : शक्ति माँगना वह

एक लड़का चोर बन गया। वह चोरी करता है। मौका मिलते ही ज़ेब में से पैसे निकाल लेता है। घर पर गेस्ट (मेहमान) आए हों उनको भी नहीं छोड़ता। अरे, कई मेहमानों के पास तो वापस घर जाने का भाड़ा तक नहीं रहता, इस तरह वह लड़का पैसे निकाल लेता। तब मेहमान बेचारा क्या करे? किस तरह वापस माँगे? और जिसके घर ठहरे थे वहाँ किसीको बता भी नहीं सकते, क्योंकि ऐसा बताने पर लड़के के घरवाले उसे मारेंगे। इसलिए किसी और के यहाँ से उधार लेकर घर वापस जाते। क्या कर सकते हैं? वह लड़का तो ज़ेब खाली ही कर देता! अब उस लड़के को हम क्या सिखाएँगे? कि इस जन्म में तू दादा भगवान के पास, चोरी नहीं करने की शक्ति माँग।

अब इससे उसे क्या लाभ होगा? कोई कहेगा, 'इसमें क्या सिखाया!' वह तो शक्ति माँगता रहता है और फिर चोरी भी करता है। अरे, भले ही चोरी करे। वह शक्ति माँगता है या नहीं माँगता? हाँ, शक्ति तो माँगता रहता है। तो हमें पता चल जाता है कि ये दवा क्या काम कर रही है। आपको क्या मालूम कि दवा क्या काम कर रही है?

प्रश्नकर्ता : सही है, हमें ये नहीं पता है कि दवा क्या काम कर रही है इसलिए शक्ति माँगने से लाभ होता है या नहीं ये भी नहीं जानते।

दादाश्री : यानी उसका भावार्थ क्या है कि पहली बात तो वह लड़का ऐसा माँगता है कि, 'मुझे चोरी नहीं करने की शक्ति दीजिए।' इसलिए पहली बात तो ये है कि उसने अपना अभिप्राय बदल दिया। 'चोरी करना वह गलत है और चोरी नहीं करना वह अच्छा है', ऐसी शक्ति माँगता है इसलिए चोरी नहीं करने के अभिप्राय पर आया। सबसे बड़ी बात ये है कि उसका अभिप्राय बदल गया। और अभिप्राय बदल गया मतलब तब से वह गुनहगार बनने से अटक गया।

फिर दूसरा और क्या हुआ? कि भगवान के पास शक्ति माँगता है इसलिए उनकी परम विनयता उत्पन्न हुई। हे भगवान! शक्ति दीजिए। इसलिए भगवान तुरंत शक्ति देते हैं। चारा ही नहीं है न! सभी को देते हैं। माँगनेवाला होना चाहिए। इसलिए मैं कहता हूँ न कि आप माँगना भूल जाते हो! आप तो कुछ माँगते ही नहीं हो, कभी नहीं माँगते!

यह बात आपकी समझ में आई, शक्ति माँगने की? यह विज्ञान साइन्टिफिक है, इसलिए यथार्थ काम करता है।

वैज्ञानकि तरीक़े से आए हल

प्रश्नकर्ता : यह तो वैज्ञानिक खुलासा है। अभिप्राय बदल गया और सही माँगा।

दादाश्री : और कहता है कि 'शक्ति दीजिए।' 'दीजिए' कहना क्या जैसी-तैसी बात है? भगवान खुश होकर कहते हैं कि, 'लो'।

और दूसरी बात, उसका अभिप्राय तो बदल गया। बाकी, उसे मार-मारकर, मार-ठोककर, अभिप्राय नहीं बदलता। ऐसा करने से तो अभिप्राय मज़बूत हो जाता है, कि चोरी करनी ही चाहिए। अरे, इस तरह मार ठोककर ये दवा नहीं की जाती, दवा (उपचार) के लिए तो दादा के पास ले आओ। गोद में बिठाकर ठीक कर देंगे। दवा के जानकार होने चाहिए न!

अभिप्राय बदलना ये कोई आसान बात नहीं है। इस प्रकार गुप्त तरीके से बदल देते हैं। यों ही हम कहें कि 'चोरी नहीं करना वह अच्छा है और चोरी करना वह गलत है' तो सामनेवाला मन में समझ जाएगा कि यों ही मना कर रहे हैं। फिर वह राह पर नहीं आएगा। और हमारी तो यह वैज्ञानिक शोध है!

सबसे बड़ी बात, खुद का अभिप्राय बदल गया। लेकिन कहता है, कि अभिप्राय तो मेरा बदल गया किन्तु भगवान अब मुझे शक्ति दीजिए। अब मुझे आपकी शक्ति की ज़रूरत है। मेरा अभिप्राय तो बदल गया है।

प्रश्नकर्ता : और इससे भी बड़ी बात यह है कि देनेवाला बैठा है इसलिए माँगना है।

दादाश्री : हाँ, जो माँगो वह देने को तैयार हूँ।

एक घंटे में मेरे जैसा बना दूँ ऐसी मैंने गेरन्टी दी है। सबकुछ कहा है। क्या ऐसी गेरन्टी नहीं दी है? कई वर्षों से मैं यह गेरन्टी देता हूँ। 'मेरे जैसा एक घंटे में बना दूँ। आपकी तैयारी होनी चाहिए।'

ज्ञानीपुरुष सभी तरह की दवा दिखा देते हैं, रोग का निदान भी कर देते हैं और दवा भी बता देते हैं। हमें सिर्फ उनसे पूछ लेना है कि, 'मेरी समझ में तो इस तरह से आया है, क्या ये सही है?' फिर वह जो बताएँ न तुरंत ही वो 'बटन' दबाना है, यानी सब राह पर आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : भूल समझ में आ जाए, तब प्रतिक्रमण विधि करनी चाहिए या नहीं?

दादाश्री : कोई हर्ज नहीं है। ज़्यादा लापरवाही हो जाए तो, 'दादा माफ़ी माँगता हूँ और मुझे फिर से शक्ति दीजिए।' दादा के पास माफ़ी माँगनी है और साथ ही साथ जिस बाबत के लिए माफ़ी माँगते हैं, उस बाबत के लिए 'मुझे शक्ति दीजिए, दादा शक्ति दीजिए।' शक्ति माँगकर लेना, आपकी अपनी शक्ति इस्तेमाल मत करना, वर्ना आपकी शक्ति खत्म हो जाएगी। और माँगकर इस्तेमाल करोगे, तो खत्म नहीं होगी बल्कि बढ़ेगी, आपकी दुकान में कितना माल होगा?

हर एक बाबत में दादा मुझे शक्ति दीजिए। हर एक बाबत में शक्ति माँग-माँगकर लेनी है। प्रतिक्रमण चूक जाएँ तो, 'प्रतिक्रमण पद्धति के अनुसार करने की मुझे शक्ति दीजिए।' सारी शक्ति माँगकर

लेनी है। हमारे पास तो, आप माँगते हुए थक जाओ इतनी शक्तियाँ हैं।

मनुष्य का स्वभाव ऐसा होता है कि जैसी प्रकृति वैसा खुद हो जाता है। जब प्रकृति सुधरती नहीं तब कहेगा, 'छोड़ो न।' अरे, नहीं सुधरे तो कोई बात नहीं, तुम अपने अंदर सुधारो न! फिर तुम्हारी 'रिस्पॉन्सिबिलिटि' (ज़िम्मेदारी) नहीं है। ऐसा यह 'साइन्स' है! बाहर चाहे कुछ भी हो, उसकी 'रिस्पॉन्सिबिलिटि' ही नहीं है। इतना समझ लें तो हल निकल आए।

कल्याणकारी प्रतिक्रमण

दादाश्री : (दोषों का) प्रायश्चित करना पड़ता है। तुम करते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : दादा भगवान के नाम से प्रतिक्रमण करते हो या नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : किताब दी है न, उसमें से करता हूँ, नौ कलमें करता हूँ।

दादाश्री : करते हो न? वह प्रतिक्रमण ही है। दादा भगवान की नौ कलमें लिखी गई हैं न, वह सबसे बड़ा प्रतिक्रमण है। यह पूरे जगत् के लिए कल्याणकारी है, ऐसा प्रतिक्रमण है।

प्रश्नकर्ता : कईबार जो दख़ल हो जाती है, सेन्सिटिव (भावुक) हो जाते हैं, उसे रोकने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : प्रतिक्रमण और पछतावा करना है और भावना करनी है कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए और वैसा होना चाहिए।' हमारी नौ कलमें जिन्हें आ गई, उनका हो गया कल्याण!

प्रश्नकर्ता : ये बात सही है कि पश्चाताप के घड़े में चाहे जैसा पाप हो तो.....

दादाश्री : हल्का हो जाता है, पश्चाताप को लेकर।

हो जाए जली हुई रस्सी के समान

प्रश्नकर्ता : एकदम जलकर राख नहीं हो जाते?

दादाश्री : एकदम जल भी जाते हैं। ऐसे कई पाप जल जाते है, खत्म हो जाते हैं। पश्चाताप का साबुन तो ऐसा है कि बहुत से कपड़ों पर (दोषों पर) लागू होता है।

किसी भी कार्य का पछतावा करो तो हमेशा उस कार्य के फल का ज़्यादातर हिस्सा नाश ही हो जाता है। फिर, जली हुई रस्सी होती है न, उसके जैसा फल देता है। फिर अगले जन्म में जली हुई रस्सी को छूते ही, उड़ जाता है (राख हो जाता है)। कोई भी क्रिया यों ही बेकार तो जाती ही नहीं। प्रतिक्रमण करने से वह रस्सी जल जाती है। लेकिन डिज़ाइन तो वही की वही रहता है। किन्तु अगले जन्म में क्या करना पड़ता है? यों ही झटका, झाड़ा कि उड़ गया।

प्रश्नकर्ता : और वो भी आपके सामने करते हैं, इसलिए फिर क्या बाकी रहेगा?

दादाश्री : कल्याण हो जाता है। अर्थात् पश्चाताप के साबुन जैसा दुनिया में कोई साबुन नहीं है।

की हुई क्रिया खाली तो जाती ही नहीं। लेकिन यह ज्ञान लेने के बाद, 'आप' और 'चेतन' को अलग कर दिया उसके बाद, ये क्रियाएँ मुर्दे जैसी क्रियाएँ हैं, निश्चेतन क्रियाएँ हैं। इसलिए उनकी ज़िम्मेदारी छूट जाती है।

हम करनेवाले नहीं हैं, जाननेवाले हैं

प्रश्नकर्ता : हम किसीको मानसिक दुःख पहुँचाएँ, तो अन्याय किया कहलाता है। यदि हम

कारोबार करते हों और कारोबार में तो माल वही का वही होता है, लेकिन दाम बढ़ाएँ तो कमाई (फ़ायदा) होती है, पर हम दाम बढ़ाएँ तो उससे दूसरों को मन में दु:ख होता है, तो क्या ये हमारा नुक़सान माना जाएगा?

दादाश्री : पर 'हमारा' मतलब कौन? हू (who)? चंदूभाई या शुद्धात्मा?

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई।

दादाश्री : आप तो शुद्धात्मा हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो चंदूभाई कर्ता हैं, उसमें आपको क्या लेना-देना? आप अलग और चंदूभाई अलग।

आप दाम बढाओ तो दु:ख होगा। दाम नहीं बढ़ाओ तो कोई आपत्ति नहीं है। उसमें आप कर्ता होकर करो, तो दु:ख होता है और यदि व्यवस्थित को कर्ता समझो तो आपकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। व्यवस्थित कर्ता है, उसे स्वीकार करो, समझो। वास्तव में आपकी जोखिमदारी नहीं है। मैंने आपको ऐसे स्टेज (भूमिका) पर ला दिया है, कि आपकी जोखिमदारी बंद हो जाती है। जोखिमदारी का एन्ड (अंत) आता है। अर्थात् कर्म करने के बावजूद भी अकर्म की स्थिति पर आपको ला छोड़ा है।

यह तो जिन्हें ज्ञान देता हूँ उनके लिए है, अन्य सभी लोग तो कर्ता ही हैं। मेरे ज्ञान को समझकर पाँच आज्ञा समझे, तो निबेड़ा आए।

क्रमिक मार्ग में आत्मा प्राप्त होने के बाद प्रतिक्रमण नहीं होते। प्रतिक्रमण को 'पॉइज़न' (ज़हर) माना जाता है। हमारे यहाँ (अक्रम में) भी प्रतिक्रमण नहीं होते। हम प्रतिक्रमण चंदूभाई के पास करवाते हैं। क्योंकि यह तो अक्रम है, यहाँ तो अभी सारा माल भरा पड़ा है। कैसा-कैसा माल भरा है, इसलिए कैसे निपट पाएगा?

अतिक्रमण और आक्रमण

इन दो शब्दों का प्रतिक्रमण करना है, एक तो अतिक्रमण और दूसरा आक्रमण। आक्रमण वस्तु हम में नहीं होनी चाहिए। आक्रमण मतलब अटेकींग नेचर (हमला करनेवाला स्वभाव)। आक्रमण मतलब, बात-बात में, शब्दों में भी अटेक कर देता है। शब्दों से अटेक हो जाए उसे अटेकींग नेचर कहते हैं, आक्रमण कहा जाता है।

अतिक्रमण और आक्रमण में क्या फ़र्क़ है?

अतिक्रमण का दोष इतना नहीं लगता, आक्रमण का दोष भयंकर है। भीतर जो उल्टा -सीधा विचार आता है, वह अतिक्रमण है, लेकिन 'इसे सीधा कर डालूँ, मेरा जो होना होगा वह होगा, लेकिन तुम्हें नहीं छोडूँगा' ये सारे भाव, आक्रमक भाव हैं। स्वरूपज्ञान की प्राप्ति के बाद आक्रमक भाव नहीं होते, किन्तु अतिक्रमण होता है। सामान्य रूप में जो होना चाहिए उससे विशेष हो जाए, अति हो जाए, वह अतिक्रमण। आक्रमक भाव गया तो वीतरागता में आया। आक्रमक भाव और अतिक्रमण भाव में बहुत डिफरन्स (फ़र्क़) है। स्वरूपज्ञान मिलने के बाद किसी पर अभाव-भाव होता रहे और भीतर बवंडर मच जाए, उसमें आक्रमक भाव नहीं होता। ऐसे अभाव-भाव आक्रमण करवाकर नहीं जाते, लेकिन अतिक्रमण करवाकर जाते हैं, इसलिए उनके प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करने के बाकी हैं। एक ही व्यक्ति के लिए ऐसे अतिक्रमण, ऐसे अभाव-भाव हज़ार-हज़ार बार भी आएँ और हज़ार-हज़ार बार उनके प्रति आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करें, तो ही ये भारी अतिक्रमण से छूट सकते हैं। इस ज्ञान के बाद रजकण जितना अभाव-भाव हम में नहीं होना चाहिए। अब हमें नई लड़ाई शुरू नहीं करनी है और जो पुरानी लड़ाई है उसका *निकाल* (निपटारा) ही करना है!

प्रश्नकर्ता : आक्रमण मतलब सीधा अटेक ही हुआ?

दादाश्री : हाँ, अटेक ही, बस! हमला करना, आक्रमण। और क्रमण यानी क्या? तब कहे, आम तौर पर जैसे व्यवहारिक बातें करते हैं, उसी तरह सारी रात बातें करते रहें और इससे किसीको दु:ख नहीं हुआ तो हमें समझ लेना चाहिए कि इसे क्रमण कहा है। और किसी के साथ ज़रा 'जोक' (मज़ाक) किया हो और सामनेवाला ज़रा कमज़ोर हो तो ज़रा चला लेता है, लेकिन भीतर उसे दु:ख लग जाए तो वह अतिक्रमण किया कहलाता है। हम (दादाश्री) सभी के साथ 'जोक' करते हैं, लेकिन कैसा? निर्दोष 'जोक' करते हैं। हम तो उसका रोग निकालकर उसे शक्तिशाली बनाने के लिए 'जोक' करते हैं। ज़रा मज़ा आता है, आनंद आता है और फिर वह आगे बढ़ता जाता है (प्रगति करता है)। सारे निर्दोष जोक करते हैं। बाकी, उन जोक से किसीको दु:ख नहीं लगता!

अतिक्रमण हो जाना वह स्वाभाविक है और प्रतिक्रमण करना वह अपना पुरुषार्थ है।

जिसे मोक्ष में जाना हो न उसे तो आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान की गाड़ी में बैठ ही जाना है, सपाटे से। निरंतर चौबीसों घंटे वही करते रहना है। और कुछ नहीं करना है।

आर्तध्यान-रौद्रध्यान वहाँ प्रतिक्रमण

मान लो रात के समय सात-आठ लोग आपके यहाँ आए और 'चंदूभाई हैं क्या' इस तरह आवाज़ दें, रात के साढ़े ग्यारह बजे हों, तो आप क्या कहोगे? आपके गाँव से आएँ हों और उनमें से एक-दो लोग आपकी पहचानवाले हों और दूसरे सभी उनकी पहचानवाले हों (उनके साथ आएँ हों)। इस तरह दस-बारह लोगों का समूह हो और आपको आवाज़ दें, तो रात के साढ़े-ग्यारह बजे आप उन लोगों से क्या कहोगे? दरवाज़ा खोलोगे या नहीं खोलोगे?

प्रश्नकर्ता : हाँ, खोलेंगे।

दादाश्री : और फिर उन लोगों से क्या कहोगे? वापस चले जाइए, ऐसा कहोगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं। वापस जाइए, ऐसा कैसे कह सकते हैं?

दादाश्री : तो क्या कहोगे?

प्रश्नकर्ता : हम उन्हें अंदर बुलाएँगे, 'अंदर आइए।'

दादाश्री : 'आइए, पधारिए, पधारिए' ऐसा कहोगे। हमारे संस्कार हैं न! इसलिए 'आइए पधारिए' कहते हैं, सभी को सोफे पर बैठने के लिए कहते हैं। बच्चा सोफे पर सोया हो, तो उसे जल्दी से उठाकर चद्दर एक तरफ फेंक देते हैं और मेहमानों को सोफे पर बैठने के लिए कहते हैं। लेकिन मन में ऐसा होता है कि, 'अभी ये लोग कहाँ से आ गए?'

यह आर्तध्यान नहीं है, रौद्रध्यान है। सामनेवाले व्यक्ति पर हम भाव बिगाड़ें, वह रौद्रध्यान। आर्तध्यान का मतलब तो खुद अपनी ही पीड़ा भुगतना। और ये तो पराये की *उपाधि* (बाहर से आनेवाले दु:ख) खुद लेकर पराए पर 'ब्लेम' (आरोप) किया। 'अभी कहाँ से आए?'

फिर भी उस समय हम क्या कहते हैं? हमारे संस्कार तो छोड़ते नहीं हैं न! धीरे से कहते हैं, 'थोड़ी चाय लोगे.....' तब उनमें से कोई कहेगा, 'चंदूभाई, इस समय चाय रहने दीजिए, खिचड़ी-कढ़ी बना दीजिए।' ऐसा कहते ही आपकी पत्नी की गाड़ी आप पर शुरू हो जाएगी! रसोईघर में क्या हो जाएगा?

वहाँ ज़रूरत, सच्चे पुरुषार्थ की

अब यहाँ (ऐसे समय पर) क्या करना चाहिए? भगवान की आज्ञा, जिसे मोक्ष में जाना हो उसे क्या करना चाहिए? 'अभी कहाँ से आए', ऐसा भाव तो व्यक्ति को आ ही जाता है। दुषमकाल का ऐसा

दबाव है, वातावरण ऐसा है, इसलिए उसे ऐसा भाव तो आ जाता है। कोई बड़ा व्यक्ति हो उसे भी ऐसा भाव आ जाता है। संयमी को भी आ जाता है। लेकिन संयमी उस समय अपने भाव में फेर बदलाव कर लेता है कि, 'ये तो रहनेवाले ही हैं, तो तुम भीतर क्यों ऐसे भाव चित्रित कर रहे हो। बाहर अच्छा दिखा रहे हो और भीतर उल्टा चित्रित कर रहे हो।' मतलब, हम पिछले जन्म का फल भुगत रहे हैं। हम अच्छी तरह से उनको अंदर बुलाते हैं, बातें करते हैं और अंदर भाव बिगाड़कर अगले जन्म के लिए नया कर्म बाँधते हैं। 'अभी कहाँ से आए', उल्टा इससे कर्म बाँधते हैं।

इसलिए वहाँ पर (उस समय) भगवान के पास माफ़ी माँगकर हमें कहना है कि, 'हे भगवान मेरी भूल हो गई। वातावरण के दबाव के कारण ऐसा बोल दिया, लेकिन मेरी ऐसी इच्छा नहीं है, वे भले ही रहें।' उनके लिए आप अंदर से साफ कर लो न, वह आपका पुरुषार्थ कहा जाता है।

ऐसा (भाव बिगड़ना) हो तो जाता है, बड़े-बड़े संयमी से भी हो जाता है। यह ऐसा विचित्र काल है। लेकिन आप अंदर साफ कर लो तो आपको वैसा फल मिलेगा।

और पत्नी भी अपना अंदर से साफ कर लें कि, 'आएँ हैं तो भोजन किए बिना रहनेवाले नहीं हैं, तो मैं क्यों भाव बिगाडूँ?' उसके बजाय कहना है 'आइए, आराम से भोजन कीजिए।'

मतलब, हमें इस तरह उपाय करना चाहिए। भाव बिगड़ जाएँ तब उसका उपाय करना है, क्योंकि अब-जब जो आ धमके हैं वे तो चार दिनों तक जानेवाले हैं नहीं!

सबकुछ कर्म के उदय के कारण ही

मेहमान जो आएँ हैं वे कर्म के उदय के कारण आएँ हैं। हमारे कर्म का और उनके कर्म का उदय! कर्म के उदय जब तक पूरे नहीं होते, तब तक वे लोग जानेवाले नहीं हैं।

इसलिए हमें मन में ऐसा मानना है कि 'कर्म के उदय हैं तब तक भले रहें। मेरे और उनके कर्म के उदय पूरे होंगे, तब अपने आप वे लोग चले जाएँगे।' ऐसा कहना है। आर्तध्यान और रौद्रध्यान नहीं करने हैं। अब भले ही रहें।

और फिर जब वे जा रहे हों न, चार दिनों के बाद जब वे जा रहे हों, तब हम कहें कि 'नहीं, आज तो आपको रुकना ही पड़ेगा', फिर भी वे आपका हाथ छुड़ाकर तुरंत चले जाएँगे। क्योंकि, कर्म के उदय हैं, वे रुकेंगे ही नहीं। वे अपनी मरज़ी से नहीं रुके हैं, कर्म रोकते हैं।

मतलब सबकुछ कर्म के अधीन है, इसलिए आपको क्या करना है, कि आप अपने अगले जन्म का चित्रांकन मत बिगाड़ना। भाव कर्म से अगला जन्म बंधा जाता है। इसलिए इतना सँभाल लोगे तो बहुत हो गया।

आर्तध्यान और रौद्रध्यान सँभाल लिया तो अगला जन्म तो अच्छा आएगा।

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादाजी, उसी समय प्रतिक्रमण और पछतावा करें, महात्मा ने प्रतिक्रमण किया मतलब भाव बदल दिया, लेकिन फिर दूसरे नए भाव तो रहे ही! खराब भाव में से अच्छे भाव किए इसलिए उसे भावकर्म तो रहने ही वाला है न? जब तक केवळज्ञान नहीं हो जाए तब तक?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करने से खराब भाव वे अच्छे भाव नहीं बन जाते। प्रतिक्रमण तो उसे (खराब भाव को) धो देता (साफ कर देता) है। कि 'भाई, ये मैंने अतिक्रमण किया इसलिए मैं प्रतिक्रमण करता हूँ और फिर से ऐसा नहीं करूँगा।'

जिसका यों रोकड़ा प्रतिक्रमण हो गया, सर्वस्व

तौर पर, तभी से वह भगवान पद ही माना जाता है। कि जिसे रौद्रध्यान और आर्तध्यान बहुत होते नहीं। कि जिसके बहीखाते में और आगे जमा नहीं हो रहा। आर्तध्यान और रौद्रध्यान हो जाए तो भी आपत्ति नहीं है, लेकिन प्रतिक्रमण कर लेंगे तो बहीखाते में लिखा नहीं जाएगा। ऐसा 'पद' हमने दिया है। 'भगवान-पद' आपके हाथ में दिया है, अब आपको जिस तरह इस्तेमाल करना आए उस तरह इस्तेमाल करना। हम तो दे देते हैं।

हमें तो अब काम निकाल लेना है! प्रतिक्रमण करते रहना। यही इसका उपाय और यही इसका इलाज! 'आपको' कोई लेना-देना नहीं है, यानी महात्माओं को आर्तध्यान होता ही नहीं। आत्मा को आर्तध्यान-रौद्रध्यान होता ही नहीं। अपने महात्माओं को आर्तध्यान-रौद्रध्यान होता ही नहीं, क्योंकि वे शुद्धात्मा हैं, खुद नामरूप नहीं हैं।

उल्टे-सीधे विचारों के प्रतिक्रमण

अभी आप कहीं दर्शन करने गए हों और वहाँ जाकर ऐसा लगे कि हमने सोचा था ज्ञानी और निकले ढोंगी! आप उधर गए वो तो प्रारब्ध का खेल है और वहाँ उनके लिए जो खराब भाव हुए कि, 'अरेरे! ऐसे नालायक के यहाँ मैं कहाँ आ गया?' वह अपना भीतर नेगेटिव पुरुषार्थ हो गया, उसका फल हमें भुगतना पड़ता है, उसे नालायक कहने का फल हमें भुगतना पड़ेगा। पाप भुगतना पड़ेगा। और विचार आना वह तो स्वाभाविक है, लेकिन फिर तुरंत ही भीतर क्या करना चाहिए? कि, 'अरेरे! मुझे ऐसा गुनाह करने की क्या ज़रूरत है?' तुरंत ही, इस तरह सीधा विचार करके हमें प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : माफ़ी माँग लेनी चाहिए?

दादाश्री : हाँ, मन में माफ़ी माँग लेनी चाहिए, प्रतिक्रमण करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मन-वचन-काया से जाने-अन्जाने में जो भी कोई भूलचूक हुई हो, उसकी माफ़ी माँगता हूँ।

दादाश्री : हाँ, 'महावीर' भगवान को याद करके या किसी और भगवान को याद करके, दादा को याद करके प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए कि 'अरेरे! वह चाहे कैसा भी हों, लेकिन मेरे हाथों क्यों उल्टा हो गया?' अच्छे को अच्छा कहने में दोष नहीं है, किन्तु अच्छे को बुरा कहने में दोष है, और बुरे को बुरा कहने में भी बहुत दोष है, जबरदस्त दोष। क्योंकि वह खुद बुरा नहीं है, उसके प्रारब्ध ने उसे बुरा बनाया है। प्रारब्ध अर्थात् क्या? उसके संयोग ने उसे बुरा बनाया, उसमें उसका क्या दोष?

संक्षिप्त में भीतर इतना समझ लें न, प्रारब्ध और पुरुषार्थ, ये सब समझ लें न, तो सब सीधी राह पर आ जाएगा। फिर कहीं भी भाव नहीं बिगड़ने दें। जहाँ भाव बिगड़े कि तुरंत सुधार ले, वहाँ तो आपत्ति है ही नहीं।

मान लो यहाँ से बहुत सारी औरतें गुज़र रही हो, और कोई आपसे कहे कि, 'देखो न वह वैश्या, यहाँ पर आई है, यहाँ कैसे आ गई?' किसी ने आपसे ऐसा कहा तो उसके कारण आपने भी उसे वेश्या कहा, उसका हमें (आपको) भयंकर गुनाह लगता है। वह कहती है कि, 'संयोगवश मेरी यह स्थिति हुई है। उसमें फिर आप किस लिए गुनाह कर रहे हो? मैं तो मेरा फल भुगत रही हूँ, लेकिन आप क्यों गुनाह कर रहे हो?' वह क्या अपनी मरज़ी से वेश्या हुई है? संयोग ने बनाया है। किसी जीवमात्र को खराब बनने की इच्छा होती ही नहीं। सबकुछ संयोग ही करवाते हैं। और फिर उसकी प्रैक्टिस (आदत) हो जाती है। शुरूआत संयोग करवाते हैं।

किसी के लिए ज़रा भी उल्टा या सीधा विचार आए, कि तुरंत उसे धो लेना। वह विचार यदि थोड़ी देर के लिए भी रहे न, तो वह सामनेवाले तक पहुँच जाता है, और फिर ऊगता है (उसका असर होता

है)। चार घंटे, बारह घंटे या दो दिनों के बाद भी ऊगता है। इसलिए, स्पंदन का प्रवाह उस ओर नहीं चले जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करके तुरंत ही मिटा देना है। प्रतिक्रमण नहीं हो पाए, तो 'दादा' को या आपके इष्टदेव को याद करके संक्षिप्त में कह देना है कि, 'यह विचार आ रहे हैं वह ठीक नहीं है, वे मेरे नहीं हैं।'

अभिप्राय से अटका, अनंत समाधि सुख

पहले जो 'कॉज़ेज़' थे उनकी अब 'इफेक्ट' आती है। लेकिन उस 'इफेक्ट' पर 'अच्छा है, बुरा है' ऐसे अभिप्राय देते हैं, इससे राग-द्वेष होते हैं। क्रिया से 'कॉज़ेज़' नहीं बंधते, लेकिन अभिप्राय से 'कॉज़ेज़' बंधते हैं।

अभिप्राय बदलने के लिए क्या करना चाहिए? कोई चोर हो तो हमें मन में उसे 'साहुकार, साहुकार' कहना है। 'यह अच्छे व्यक्ति हैं, शुद्धात्मा हैं, अपना ही गलत अभिप्राय उन पर बैठा है', इस तरह भीतर बदल देना है।

आप अब ऑपिनियन (अभिप्राय) देते हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं, अब तो बिल्कुल नहीं देता।

दादाश्री : तो बस, निबेड़ा आ गया।

सामनेवाले पर का हमारा अभिप्राय टूटा और हम उसके साथ खुश होकर बात करें इसलिए फिर वह भी खुश हो जाता है। बाकी, उसे अभिप्राय सहित देखो, उसके दोष देखो, तो हमारे मन की छाया उस पर पड़ती है। फिर वो आए तो हमें अच्छा नहीं लगता, ऐसा फोटो तुरंत उसके भीतर भी पड़ता है।

अभिप्राय की वजह से जैसा है वैसा देख नहीं सकते, मुक्त आनंद अनुभव में नहीं आता, क्योंकि अभिप्राय का आवरण है। अभिप्राय ही नहीं रहें तब निर्दोष हो सकते हैं। स्वरूपज्ञान के बाद अभिप्राय हैं तो आप मुक्त कहलाते हो, पर महामुक्त नहीं कहलाते। अभिप्राय की वजह से ही अनंत समाधि अटकी हुई है।

उनके प्रतिक्रमण एक साथ

प्रश्नकर्ता : सामान्य तौर पर एक घंटे में पाँच-पच्चीस अतिक्रमण हो जाएँ, तो?

दादाश्री : उनके प्रतिक्रमण इकट्ठे कर लेने हैं। एक साथ करने हैं। इकट्ठे प्रतिक्रमण कर रहा हूँ, कहना है।

प्रश्नकर्ता : तो किस तरह करने हैं? क्या कहना है?

दादाश्री : बहुत सारे अतिक्रमण हो गए इसलिए उन सभी के इकट्ठे प्रतिक्रमण करता हूँ। बाबतें बोलनी हैं कि इस विषय (बाबत) पर इकट्ठे प्रतिक्रमण कर रहा हूँ। तो हल आ गया! फिर भी बाकी रह गया तो उसे भी धो लेंगे। बाद में धो लेंगे। लेकिन बाकी है करके वहीं पर बैठे नहीं रहना है। बैठे रहेंगे तो सारे प्रतिक्रमण बाकी रह जाएँगे। उलझन (गुत्थी) में पड़ने की ज़रूरत नहीं है। व्यक्ति से दोष होना स्वाभाविक है। उससे विमुक्त होने का रास्ता क्या है? सिर्फ 'ज्ञानीपुरुष' ही उसे दिखाते हैं, 'प्रतिक्रमण'।

प्रतिक्रमण वह तो सबसे बड़ा हथियार है। इसलिए यदि प्रतिक्रमण का धर्म पकड़ लिया तो तुम्हारे सिर पर गुरू नहीं होंगे तो भी चलेगा। अर्थात् दादा के पास इतना सीख लिया तो बहुत हो गया। इसमें सबकुछ आ गया। जैसे ही कोई भूल हो गई कि दादा के पास माफ़ी माँग लेनी है। तो उतने गुनाह में से मुक्त हो गए। इसमें कुछ कठिन है क्या? दादा क्या उपवास करने के लिए कहते हैं? कि गलती क्यों की इसलिए उपवास करना!

ऐसा कहें तो लोगों को लगेगा कि दादा ने हमें भूख से मार डाला, लेकिन दादा ऐसे भूख से मारते नहीं हैं न? कोई गाली दे और असर हो जाए तो अपनी ही भूल है ऐसा खुद को महसूस होता रहे और खुद प्रतिक्रमण करता रहे तो वह भगवान का सबसे बड़ा ज्ञान है। यही मोक्ष में ले जाएगा। इतना सा ही शब्द, हमारे एक ही वाक्य का यदि पालन करे न तो मोक्ष में चला जाए! बाकी सबका क्या करना है?

इसमें प्रैक्टिस की ज़रूरत

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने का बहुत देर बाद याद आता है कि इस व्यक्ति का प्रतिक्रमण करना था।

दादाश्री : लेकिन याद तो आता है न! सत्संग में ज़्यादा बैठने की ज़रूरत है। सब पूछ लेना चाहिए। सूक्ष्म विज्ञान है, ये सबकुछ पूछ लेने की ज़रूरत है।

आपकी इच्छा तो है न प्रतिक्रमण करने की फिर भी हो नहीं पाता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, इच्छा तो है ही न!

दादाश्री : हाँ, अरे! प्रैक्टिस नहीं पड़ी है। इसलिए पहले प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। पहले दो-तीन -चार दिनों के लिए हमें प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। हमें डॉक्टर ने कहा हो कि आज दाँए हाथ से खाना मत खाना, फिर भी खाते समय दाँया हाथ ही आगे आ जाता है।

प्रश्नकर्ता : निरंतर अपने ख़्याल में रहे तो प्रयत्न नहीं करना पड़ता, सहज ही हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, ये सबकुछ सहज ही हो जाए ऐसा है। उसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता। आपको भी ऐसा मैं कर दूँगा।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करता हूँ न तो आनंद आता है, अच्छा लगता है। लेकिन अभी भी, जितने दोष दिखने चाहिए न, वे दिखते नहीं हैं।

दादाश्री : वो अब दिखेंगे, अभी देर लगेगी। परतें कम होगी तब दिखेंगे। अभी तो सब बड़ा-बड़ा ही चल रहा है। लेकिन यह प्रतिक्रमण करने से परतें कम होगी।

दोष दिखने वह आसान बात नहीं है। हम तो रोशनी कर देते हैं, लेकिन सामनेवाले की दृष्टि होनी चाहिए कि 'मुझे देखने हैं', तो दिखते रहते हैं। जैसे कि, खाने की थाली में से खाना खाने के लिए खुद हाथ तो उठाना पड़ेगा न? यों कहे कि 'ऐसे ही खाना मेरे मुँह में चला जाए', तो क्या ऐसा चलेगा? प्रयत्न तो होने ही चाहिए न?

कषाय के निमित्त बनने के प्रतिक्रमण

कषाय नहीं करने और प्रतिक्रमण करने यही दो धर्म हैं। कषाय नहीं करने, वह धर्म है। और पूर्वकर्म के आधार पर हो जाएँ, तो उनके प्रतिक्रमण करने, वही धर्म है। बाकी अन्य कोई धर्म जैसी वस्तु नहीं है। और इन दोनों आइटमों (वस्तुओं) को सभी लोगों ने निकाल दिया है।

यदि आपने सामनेवाले से कुछ उल्टा कह दिया तो आपको प्रतिक्रमण करना पड़ेगा, लेकिन उन्हें भी आपका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। उन्हें किस बात का प्रतिक्रमण करना पड़ेगा? कि, 'मैंने कभी ऐसी भूल की होगी कि इनको मुझे गाली देने का मौका आया!' अर्थात् उन्हें उनकी भूल का प्रतिक्रमण करना पड़ता है। उन्हें उनके पूर्वजन्म का प्रतिक्रमण करना पड़ता है और आपको आपके इस जन्म का प्रतिक्रमण करना पड़ता है! एक दिन में ऐसे पाँचसौ-पाँचसौ प्रतिक्रमण करें तो मोक्ष में जाता है!

ऐसा धर्मध्यान और ऐसे प्रतिक्रमण तो और कहीं पर अब रहे नहीं हैं न! तो अब क्या हो सकता

है? वैसे भी रो-रोकर भुगतना तो पड़ता ही है न? इसके बजाय हँसकर भुगतें तो क्या बुरा है?

यदि इतना ही करो न, फिर दूसरा कोई धर्म नहीं ढूँढो तो भी हर्ज नहीं है। इतना ही पालन करो तो भी बस है और मैं तुम्हें गारन्टी देता हूँ, तुम्हारे सिर पर हाथ रख देता हूँ कि जाओ, मोक्ष के लिए ठेठ तक मैं तुम्हें सहकार दूँगा! तुम्हारी तैयारी होनी चाहिए। एक ही शब्द का पालन करे तो बहुत हो गया!

खुद की भूलों की माँग लो माफ़ी

किसीको हम से किंचित्मात्र दु:ख हो जाए तो समझ लेना कि हमारी भूल है। हमारे भीतर ऊँचे-नीचे परिणाम होने लगे, यानी भूल हमारी है ऐसा समझना है। सामनेवाला व्यक्ति भुगत रहा है इसलिए उसकी भी प्रत्यक्ष भूल तो है, लेकिन निमित्त हम बनें, हमने उसे झिड़काया इसलिए हमारी भी भूल है। दादा को *भोगवटा* (सुख-दु:ख का असर) क्यों नहीं आता? क्योंकि उनकी एक भी भूल बाकी नहीं रही है। हमारी भूल से सामनेवाले को असर हो जाए, यदि कोई कर्ज़ हो जाए तो तुरंत ही मन में माफ़ी माँगकर जमा कर लेना है। हमारी भूल हुई हो तो कर्ज़ चढ़ता है लेकिन तुरंत ही केश-नक़द प्रतिक्रमण कर लेना है। और यदि किसी और की वजह से हमारी भूल हो जाए तो भी हमें आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान कर लेना है। मन-वचन-काया से प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में क्षमा माँगते रहना है।

कदम-कदम पर जागृति रहनी चाहिए। हमारे अंदर क्रोध-मान-माया-लोभ के कषाय हैं। वे भूल करवाते हैं और कर्ज़ करवाते हैं। लेकिन तब हमें तुरंत ही तत्क्षण माफ़ी माँगकर जमा करके चोखा कर लेना है। यह व्यापार पेन्डिग (बाकी) नहीं रखना चाहिए। यह तो दरअसल में नक़द व्यापार कहलाता है।

माफ़ी माँगकर उलझनों का लाओ हल

सामनेवाले की भूल हो फिर भी हमें माफ़ी माँग लेनी है।

प्रश्नकर्ता : सबके बीच में, दादा की साक्षी में हर एक खुद की भूलों की माफ़ी माँग ले तो?

दादाश्री : वो तो समझ लो शुरूआत कहलाएगी। उससे दोष धुल नहीं जाता। आपको प्रतिक्रमण ऐसा करना चाहिए कि सामनेवाला (आपके साथ) बोलने लगे।

जब-जब उलझन होने लगे, तब-तब दादा अवश्य याद आ ही जाएँ और उलझन में नहीं पड़ें। 'हम तो क्या कहते हैं कि उलझन में मत पड़ना और कभी उलझन हो जाए तो प्रतिक्रमण कर लेना।' ये तो उलझन शब्द का तुरंत पता चलता है। लोग तो 'सत्य बोलो, दया रखो, चोरी मत करो', ये सुन-सुनकर तो थक गए हैं।

भीतर उलझन हो तो उलझन लेकर सो नहीं जाना चाहिए। उलझन का हल लाना चाहिए। अंत में यदि कोई भी हल नहीं निकले तो भगवान से माफ़ी माँगते रहना है कि इसके साथ उलझन हो गई है इसलिए माफ़ी माँग रहा हूँ, तो भी हल निकल आएगा। माफ़ी ही सबसे बड़ा शस्त्र है। बाकी दोषों का तो ऐसा है कि निरंतर दोष तो होते ही रहते हैं।

किन्तु प्रतिक्रमण करे तो छूटे

दोष हुए बिना तो रहते ही नहीं न! निरे दोष होते ही रहेंगे। वो दोष आपको दिखते रहने चाहिए। जो दोष दिखे फिर उन दोषों का प्रतिक्रमण करना है, प्रश्चाताप करना है और फिर से ऐसा नहीं करूँगा, ऐसा प्रत्याख्यान करना है। उसे 'शूट ओन साइट' कहते हैं। दोष होते ही तुरंत उसे धो डालो। आपको इस तरह से तुरंत धोने की इच्छा है या

बारह महीनों के बाद? 'शूट ओन साइट' होना चाहिए। दोष उत्पन्न होते ही प्रतिक्रमण कर लिया जाए तो निबेड़ा आता है।

तभी सच्चे प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : मेरा अब किसी के साथ टकराव नहीं होता। हर जगह सँभाल लेता हूँ किन्तु इनके साथ छः - आठ महीनों में, वैसे अब तो बहुत कम हो गया है, लेकिन फिर भी इनके साथ आंतरिक तप नहीं हो पाता। बोल ही देता हूँ।

दादाश्री : उसमें कोई हर्ज नहीं है। उसमें तो *निकाल* किए बिना चारा ही नहीं है न! उन्हें भी *निकाल* करना है, फिर आपको भी *निकाल* करना है। टकराव हुआ मतलब सिर्फ किसी अकेले की भूल तो नहीं कही जाएगी, दोनों की ही भूल होती है, किसीकी चालीस प्रतिशतवाली, किसीकी साठ प्रतिशतवाली। किसीकी तीस प्रतिशतवाली फिर सत्तर प्रतिशत, अस्सी प्रतिशत, इस तरह दोनों की कुछ तो भूल होगी।

प्रश्नकर्ता : और फिर दो-पाँच मिनटों में ही समाधान तो आ जाता है।

दादाश्री : वो तो आ जाए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उस समय पराक्रम का इस्तमाल करें और संयोग को सँभाल लें तो आनंद आता है। लेकिन अभी संयोग को सँभाल नहीं पाते।

दादाश्री : लेकिन धीरे-धीरे इस तरह की जागृति रखकर करना है। आप जितना मेरे साथ रहोगे न, त्यों-त्यों परिवर्तन होता जाएगा। मेरा एक ही शब्द आपके कानों में पड़े न, तो वह शब्द ही काम करता रहता है।

प्रश्नकर्ता : कहावत है न, कि संकट के समय पार उतर गया वह सौ वर्षों तक जीता है। उसी तरह हमारे कषाय उत्पन्न हों, उन पर यदि काबू पा लिया जाए तो कितना कुछ जीत लेंगे।

दादाश्री : ऐसा है कि काबू अर्थात् क्या कहना चाहते है? कि हम चाहें तब कर सकें। हमें यह ज्ञान मिल गया तो ये सारे कषाय तो कंट्रोल (नियंत्रण) में ही रहते हैं, ज्ञान ही काम करता है।

जब घर के लोग निर्दोष दिखें, तब समझना कि आपका प्रतिक्रमण सही है। वास्तव में निर्दोष ही हैं, सारा जगत् निर्दोष ही है। अपने दोषों के कारण आप बंधे हुए हो, उनके दोषों के कारण नहीं, आपके अपने दोषों के कारण ही बंधे हुए हो। ऐसा जब समझ में आ जाएगा, तब जाकर हल निकल आएगा!

दोष स्वीकार ने पर, दोष जाएँ

प्रश्नकर्ता : अभी जो भूलें हो रही हैं वे पिछले जन्म की हैं न?

दादाश्री : पिछले जन्म के पाप को लेकर ही ये भूलें हैं। किन्तु इस जन्म में भूलों को मिटाता नहीं और फिर बढ़ाता जाता है। भूल को मिटाने के लिए भूल को भूल कहना पड़ता है। उसका *उपराणा* (रक्षण करना) नहीं लेना है। 'यह' 'ज्ञानीपुरुषों' की चाबी है। इससे कोई भी ताले खुल जाते हैं।

यानी, खुद की भूल मिटाएगा, तब काम बनेगा। या फिर ज्ञानीपुरुष आपको पार लगा दें तो काम बन जाता है। ज्ञानीपुरुष तार सकते हैं। आप ऐसा कहो कि मुझे बचाइए, तो बचा लेते हैं। उनको ऐसा नहीं है कि उन्हें फी (क़ीमत) चाहिए। क्योंकि अमूल्य चीज़ की फी कितनी दोगे? मूली को मूल्यवान कहा जाता है? मूली तो दस पैसे की है, मूल्यवान है न! और यह तो अमूल्य चीज़ कहलाती है। इसका मूल्य नहीं होता। अमूल्य! अमूल्य! यानी इसकी क़ीमत नहीं होती!

अंत में तो किसी की भी भूल नहीं दिखती।

पहले, दिखती है और प्रतिक्रमण करता है, उसके बाद किसी की भी भूल नहीं दिखती ऐसा यदि पूरी रात रहे और बहीखाते बंद हो गए, तो काम बन गया। उस दिन से फिर आपको अगले जन्म का डर नहीं रहेगा, दूसरे दिन से ही ऐसा वर्तन करना चाहिए। और यह तो सर्व समाधानी ज्ञान है। इसमें कुछ भी बाकी नहीं रहता! दोष हो जाए और उनके प्रतिक्रमण कर लें तो वह सबकुछ चोखा कर देता है। प्रतिक्रमण अर्थात् लिया हुआ वापस दे देना। प्रतिक्रमण किया यानी बहीखाते चोखे! मतलब, आपने दोष का स्वीकार किया न। स्वीकार किया इसलिए यू आर नॉट रिस्पोन्सिबल। यह तो विज्ञान कहलाता है।

अभिप्राय से अलग हुआ वही प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : समझ में तो काफ़ी कुछ है, लेकिन उसके अनुसार होता नहीं है उसका क्या?

दादाश्री : नहीं हो तो उसमें हर्ज नहीं है। समझ की ही ज़रूरत है। समझ अर्थात् अभिप्राय अलग हुआ और तब से वह उससे छूट गया। चंदूभाई कोई गलत काम करते हों और 'खुद' कहे कि 'मुझे ये काम नहीं चाहिए, मुझे ऐसा नहीं करना है', तब से अभिप्राय अलग हो गया। और ऐसा अभिप्राय हमेशा रहे तो 'वह' छूट ही जाता है। अभिप्राय से मुक्त करना है, वस्तु से मुक्त नहीं करना है। वस्तु से तो जब अपने आप मुक्त हो जाए तब ठीक है। लेकिन उसे निराधार बना देना है। मतलब अभिप्राय से मुक्त होना है। इसलिए हमने प्रतिक्रमण दिया है न! प्रतिक्रमण यानी अभिप्राय से मुक्त हो गया, उसका सचोट प्रतिक्रमण करे, मतलब अभिप्राय से मुक्त हो गया और फिर पछतावा भी करता है।

प्रश्नकर्ता : अब प्रतिक्रमण तो जो अभिप्राय खड़े होते हैं उसके ही करने पड़ते हैं न?

दादाश्री : जो अभिप्राय खड़ा हुआ है वह पहले के हिसाब के कारण हुआ है। अब अगर प्रतिक्रमण करें तो फिर से हम अभिप्राय बाँधते नहीं हैं। इस तरह करे कि 'इस बात में हम सहमत नहीं हैं', उस समय छूटा! पहले का बंधा हुआ अभिप्राय इस समय छूट गया। और ऐसा समझ में आ गया तो कोई दख़ल नहीं रहती। भूल का प्रोटेक्शन (रक्षण) होता हो तो वह आपको सुधार लेना है। हाँ, और कुछ नहीं करना है। भूल हुई, किसीको नुक़सान हो ऐसा हो गया, तो प्रतिक्रमण कर लिया, यानी हो गया। निबेड़ा आ गया।

अपना मार्ग ही बहुत ऊँचा मार्ग है न! प्रतिक्रमण का मार्ग ही बहुत ऊँचा है! आधे घंटे से भीतर उल्टा चल रहा हो और यदि जागृत हो गया तो दो ही मिनटों में सपाटे से सब फ्रेक्चर कर देता है। यह 'अक्रम विज्ञान' ही ऊँचे प्रकार का है।

निबेड़ा लाएँ ज्ञान द्वारा

प्रश्नकर्ता : क्या ज्ञान लेने के बाद कर्म बंधते हैं?

दादाश्री : उल्टा बोले तो बंधते नहीं हैं पर छूटते भी नहीं हैं। कर्म कब छूटते हैं? कि ज्ञानपूर्वक हो, अर्थात् समझ पूर्वक, ज्ञानपूर्वक उसका निबेड़ा आता है। अज्ञान द्वारा बंधे हुए कर्मों का ज्ञान द्वारा निबेड़ा लाएँ तब छूट सकते हैं। अभी चाहे हमें रास नहीं आता हो लेकिन फिर भी उसका ज्ञान के द्वारा ही निबेड़ा लाना पड़ता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' होकर यह सब देखते रहें, इस तरह निबेड़ा लाना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : आपका ज्ञान मिलने से पहले यदि नरक का बंध पड़ गया हो, तो नरक में जाना पड़ता है न?

दादाश्री : ऐसा है कि यह ज्ञान ही इस प्रकार का है कि सारे पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। बंध उड़ जाता है। नरक में जानेवाले भी, जीवित हैं उस दौरान प्रतिक्रमण कर लें, तो उनका पाप धुल जाता है।

पोस्ट में खत डालने से पहले नीचे आप लिख दो कि ऊपर का वाक्य लिखते समय मन ठिकाने पर नहीं था तो वह वाक्य उड़ जाता है (उसका मतलब नहीं रहता)!

प्रश्नकर्ता : प्रायश्चित से बंध छूट जाता है?

दादाश्री : हाँ, छूट जाता है। अमुक ही प्रकार के जो बंध हैं, उन कर्मों का प्रायश्चित करने से वे मज़बूत गाँठ से ढ़ीले पड़ जाते हैं। हमारे प्रतिक्रमण में बहुत शक्ति है। दादा को हाज़िर रखकर करो तो काम बन जाए।

महाव्रत भंग, वहाँ ज़रूरत प्रतिक्रमण की

यह चेतनवाणी है। चेतनवाणी ही काम करेगी! शुद्धतापूर्वक बैठकर प्रतिक्रमण शुरू कर दो! पाँच महाव्रत हैं, वे महाव्रत कहाँ-कहाँ भंग हुए हैं उनका ही प्रतिक्रमण करना है, और कुछ नहीं करना है! बाकी, घूमे-फिरे हों, पान खाया हो, उनका प्रतिक्रमण नहीं करना है। मनुष्य के मनुष्य के साथ आमने-सामने जो दोष हुए हों उनके प्रतिक्रमण करने हैं। यानी मिश्रचेतन के साथ जो दोष हुए हों, उन दोषों के लिए प्रतिक्रमण करने को कहता हूँ! मिश्रचेतन के साथ आपके जो-जो दोष हुए हों उनके प्रतिक्रमण करना। यह 'दादा' की आज्ञा हुई है उसका पालन करना! वैसे तो रोज़ प्रतिक्रमण करते रहते हैं। किसी मिश्रचेतन के प्रति विषय का विचार आया हो, कोई दोष किया हो, ऐसे सभी दोषों का, बचपन से लेकर अब तक का याद कर-करके प्रतिक्रमण करना है। यह प्रतिक्रमण आज्ञापूर्वक का है इसलिए सबकुछ धुल जाएगा! मनुष्य से कौन-सा आचार (व्यवहार) नहीं हो जाता! लेकिन आज्ञा का पालन किया तो चोखा हो जाता है।

अब छूटना है, *अटकण* से

अब भीतर बिल्कुल 'क्लीयरन्स' (चोखा) हो जाना चाहिए। यह 'अक्रम-ज्ञान' मिला है इसलिए खुद को निरंतर सुख में रहना हो तो रह सकते हैं, ऐसा हमारे पास 'ज्ञान' है। इसलिए अब किस तरह *अटकण* (जो बंधनरूप हो जाए, आगे नहीं बढ़ने दे) छूटे, हम उससे कैसे मुक्त हो जाएँ, इसका हल लाना चाहिए। उसके लिए आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करके भी हल ला देना है।

यहाँ पर स्त्रियों को, पुरुषों को, हर एक को प्रतिक्रमण का साधन दिया है। दृष्टि बिगड़ी कि तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना है, फिर जोखिमदारी मेरी है। क्योंकि आपने प्रतिक्रमण किया, मेरी आज्ञा का पालन किया इसलिए सारी जोखिमदारी मेरी है। और आपको क्या चाहिए? दादा जोखिमदारी लेते हैं, फिर आपको क्या आपत्ति है?

इसलिए हम आपसे कहते हैं कि अन्य पाँच इन्द्रियों के विषय के नहीं, किन्तु स्त्रीओं और पुरुषों से इतना ही कहते हैं कि जहाँ स्त्रीविषय या पुरुषविषय संबंधी विचार आया कि तुरंत ही तभी के तभी प्रतिक्रमण कर लेने हैं। 'ऑन दी स्पॉट' तो कर ही लेने हैं, लेकिन बाद में भी इसके सौ-दौ सौ प्रतिक्रमण कर लेने हैं।

होटल में नाश्ता करने गए हों और उसका प्रतिक्रमण नहीं किया होगा तो चलेगा। मैं आपके पास वो प्रतिक्रमण करवा लूँगा लेकिन विषय संबंधी रोग नहीं घुसना चाहिए। यह तो भारी रोग है। यह रोग निकालने का औषध क्या है? तब कहे, कि हर एक मनुष्य को जहाँ यह *अटकण* होती है, वहाँ यह रोग होता है। कई पुरुषों को, कोई स्त्री जा रही हो और वह उसे देखें कि तुरंत उसके भीतर का वातावरण बदल जाता है। अब ये सारे हैं तो हाड़ मांस के पुतले ही, लेकिन उसे तो स्त्री का रूप आकर्षित करता है। खरबूजों के ढेर पर क्या उसे राग होता है? लेकिन मनुष्य है इसलिए उसे पहले से ही रूप पर आकर्षित होने की आदत है। 'आँखें

कितनी सुंदर है! बड़ी-बड़ी आँखें हैं!' यों कहता है। अरे, बड़ी-बड़ी आँखें तो भैंसे की भी होती है! वहाँ तुम्हें राग क्यों नहीं होता? तब कहे कि, 'वो तो भैंसा है और ये तो मनुष्य है।' अरे, ये तो फँसने की जगह है!

होता है छुटकारा, सच्ची आलोचना से

मनुष्य ने सच्ची आलोचना की ही नहीं है, वही मोक्ष में जाने से रोकती है। गुनाह का (गुनाह हो जाए उसका) हर्ज नहीं है। सच्ची आलोचना कर ले तो कोई हर्ज नहीं है। और आलोचना अलौकिक पुरुष के पास करनी चाहिए। अपने दोषों की आलोचना कभी की है ज़िन्दगी में? किसके पास आलोचना करे? और आलोचना किए बिना चारा नहीं है। जब तक आप आलोचना नहीं करो तो गुनाह को माफ़ कौन करवाएगा? ज्ञानीपुरुष चाहे सो कर सकते हैं। क्योंकि वो कर्ता नहीं हैं, इसलिए। यदि कर्ता होते तो उनको भी कर्म बंधते! लेकिन कर्ता नहीं हैं इसलिए चाहे सो कर सकते हैं।

हमें गुरु के पास आलोचना करनी चाहिए, लेकिन अंतिम गुरु यह 'दादा भगवान' कहलाते हैं। हमने तो आपको रास्ता बता दिया। हमने तो अंतिम गुरु दिखा दिए। वह आपको जवाब देते रहेंगे और इसी कारण तो वे 'दादा भगवान' हैं। इसलिए जब तक वे प्रत्यक्ष (प्रकट) नहीं होते, तब तक 'इस' दादा भगवान को भजना पड़ता है। वे प्रत्यक्ष प्रकट हो जाएँ फिर अपने आप वह मशीन चालू हो जाता है। फिर वह खुद 'दादा भगवान' हो जाता है।

खुद की खानगी (निजी) कोई भी बात बतानी हो, तो लोग क्यों नहीं बताते? क्योंकि फिर सामनेवाला उसे धमकाता ही रहता है, लगाम उसके हाथ में आ गई न! धमकाता है या नहीं धमकाता? और हम यह धमकाने के लिए नहीं करते, हम तो उसे मुक्त करना चाहते हैं कि, हम तुम्हारें हर एक गुनाह को माफ़ कर देंगे। 'दादा भगवान' प्रकट हुए हैं! जगत् में सबसे बड़ा वाक्य इतना ही है। असल में समझने का यही है कि हमारे पास आलोचना करें तो कर्म भस्मीभूत हो जाते हैं।

पूरी ज़िन्दगी के दोष धुल जाते हैं, प्रतिक्रमण से

हम यहाँ प्रतिक्रमण करने के लिए बिठाते हैं, उससे क्या होता है? दो घंटों के लिए प्रतिक्रमण करवाते हैं न, कि बचपन से लेकर अब तक जो-जो दोष हुए हों उन सभी को याद कर-करके प्रतिक्रमण कर लो। सामनेवाले के शुद्धात्मा को देखकर प्रतिक्रमण कर लो, ऐसा कहते हैं। छोटी उम्र से जब से थोड़ी समझ आने की शुरूआत हुई, तब से लेकर तो अब तक जो-जो हुआ उन सभी दोषों को याद करके उनका प्रतिक्रमण करना है। इसी प्रकार प्रतिक्रमण करने से उन सभी दोषों का बड़ा हिस्सा उसमें धुल जाता है। फिर दोबारा प्रतिक्रमण करता है तब फिर से छोटे-छोटे दोष भी उसमें आ जाते हैं। फिर दोबारा करे तब उससे भी छोटे दोष आ जाते हैं। इस तरह दोषों का सारा भाग ही खत्म कर देता है।

दो घंटों के प्रतिक्रमण में, पूरी ज़िन्दगी के चिपके हुए दोषों को धो लेना है। 'और फिर कभी भी ऐसे दोष नहीं करूँगा' ऐसा तय करना है, यानी प्रत्याख्यान हो गया।

आप जब प्रतिक्रमण करने बैठते हो न, तब एक तरफ अमृत की बूंदे गिरती रहती हैं और आप हल्के हो गए ऐसा महसूस होता है।

जब आप पूरी ज़िन्दगी के प्रतिक्रमण करते हो, तब ना ही आप मोक्ष में हो और ना ही संसार में हो। प्रतिक्रमण करते समय यों तो आप पिछले दोषों का सारा विवरण देते हो। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार सभी के फोन-वोन बंद होते हैं, अत:करण बंद होता है। उस समय सिर्फ प्रज्ञा काम करती है। इसमें आत्मा भी कुछ नहीं करता।

दोष दिखते हैं, प्रज्ञाशक्ति से

भूतकाल के सारे दोष वर्तमान में दिखाई दें वह ज्ञानप्रकाश है, वह मेमरी (स्मृति) नहीं है।

प्रश्नकर्ता : क्या प्रतिक्रमण से आत्मा पर इफेक्ट (असर) होता है?

दादाश्री : आत्मा को तो कोई इफेक्ट छूती ही नहीं। अगर इफेक्ट हो जाए तब तो संज्ञी कहलाएगा। किन्तु यह तो आत्मा है, यह बात हंड्रेड परसेन्ट (सौ-प्रतिशत) डिसाइडेड (तय) है। जहाँ मेमरी नहीं पहुँचती वहाँ ये सारे दोष आत्मा के प्रभाव से दिखते हैं। आत्मा अनंत शक्तिवाला है, उसकी प्रज्ञाशक्ति गहराई में जाकर दिखाती है। इस प्रतिक्रमण से तो खुद को अनुभव होता है कि हल्के हो गए। पता चलता है कि अब हल्के हो गए और बैर टूट जाता है, नियम से ही टूट जाता है। प्रतिक्रमण करने के लिए सामनेवाला व्यक्ति नहीं मिले तो कोई हर्ज नहीं है। इसमें रूबरू के हस्ताक्षरों की ज़रूरत नहीं है। जिस तरह कोर्ट में रूबरू के हस्ताक्षरों की ज़रूरत है, वैसे ही यहाँ भी ज़रूरत नहीं है। क्योंकि, ये गुनाह रूबरू में नहीं हुए हैं। लोगों की गैरहाज़िरी में हुए हैं। यों तो लोगों की हाज़िरी में हुए हैं लेकिन रूबरू में हस्ताक्षर नहीं किए हैं। हस्ताक्षर अंदर के हैं, राग-द्वेष के हस्ताक्षर हैं।

कभी एकांत में बैठे हों और प्रतिक्रमण या ऐसा कुछ करते-करते भीतर थोडा-सा आत्मा का स्वाद आ जाता है, ऐसा स्वाद आ जाए उसे अनुभव कहते हैं।

सहाध्यायीओं के प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण करने से बहुत शक्ति खीलती हैं, लेकिन हमारी आज्ञा से करे, तो।

ज्ञानीपुरुष की आज्ञा से प्रतिक्रमण हों, तो वे अनंत जन्मों के पापों को जला देते हैं। यह प्रतिक्रमण तो कैसा प्रतिक्रमण है? सारे बैर छूट जाए। क्योंकि, सहाध्यायीओं के साथ ही ज़्यादा बैर बंधे होते हैं। वर्ल्ड (दुनिया) में कभी दूसरों के साथ इतना बैर नहीं होता और सहाध्यायी तो सारा दिन याद ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : सतयुग में भी सहाध्यायी के साथ बैर बंधता है?

दादाश्री : नहीं, तब बैर नहीं बंधता। तब तो सभी की समझ ही ऊँची थी। और वह सारा *चीकणा* (गाढ़) प्रेम!

प्रश्नकर्ता : सहाध्यायी के साथ बैर बंधने का कारण क्या है?

दादाश्री : नासमझी के कारण। सतयुग में ऐसा-वैसा नहीं होता। चोर वे चोर, जो लुच्चे वे लुच्चे और साहुकार वे साहुकार। बिना चोर के तो यह दुनिया कभी थी ही नहीं। लेकिन सतयुग में उनकी संख्या थोड़ी कम होती है।

जो हमारे साथ होते हैं, पहले भी थे और आज भी हैं, वे हमारे धर्मबंधु कहलाते हैं और अपने धर्मबंधुओं के साथ ही जन्मों-जन्म के बैर बंधे होते हैं। इसलिए, उनके साथ कोई बैर बंधा हुआ हो तो उसके लिए हम आमने-सामने प्रतिक्रमण कर लें तो सारा हिसाब चोखा हो जाता है। एक भी व्यक्ति का आमने-सामने प्रतिक्रमण करने से मत चूकना। सहाध्यायी के साथ ही ज़्यादा बैर बंधता है और उनके प्रत्यक्ष प्रतिक्रमण कर लें तो धुल जाता है।

क्रमण से प्रकृति बनी, फैली अतिक्रमण से

प्रश्नकर्ता : वैसे तो यह प्रतिक्रमण सभी तरह से मुख्य है न? क्योंकि यदि समझ में आए या नहीं आए, भूल दिखती हो या नहीं दिखती हो, कुछ आता

हो या नहीं आता हो, प्रतिक्रमण से सभी बातों का हल अपने आप आता जाता है न?

दादाश्री : अतिक्रमण से ये सब खड़ा (उत्पन्न) हुआ है और अब यहाँ से अपने देश में (मोक्ष में) जाना हो, तो प्रतिक्रमण करो। आसान बात है न? आसान है या कठिन?

प्रश्नकर्ता : बहुत आसान है।

दादाश्री : अतिक्रमण से ये सबकुछ उत्पन्न हुआ है और प्रतिक्रमण से बंद हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : पूरी प्रकृति अतिक्रमण से उत्पन्न हुई है न?

दादाश्री : प्रकृति क्रमण से उत्पन्न हुई है, लेकिन अतिक्रमण से फैलती है, डालियाँ-वालियाँ सबकुछ निकल आता है।

प्रश्नकर्ता : अतिक्रमण से पूरी प्रकृति फैलती है।

दादाश्री : और प्रतिक्रमण से, फैला हुआ सब कम होता जाता है, इसलिए उसे भान आता है।

प्रतिक्रमण से सामनेवाले की परिणती बदलती है, लोगों को ऐसा अनुभव में आया है। इसलिए फिर छोड़ते नहीं न! 'दिस इज़ दी केश बैंक' प्रतिक्रमण वह तो 'केश बैंक' कहलाता है, तुरंत फल देनेवाला।

आज्ञा चूक जाएँ, वहाँ करना है प्रतिक्रमण

हमारे यहाँ कुछ पूछने जैसा रखा ही नहीं है। सिर्फ आज्ञा का ही पालन करना है, कभी कुछ पूछना हो तो पूछ सकते हैं लेकिन ज़्यादा बहस नहीं करनी है। वर्ना भीतर का सब चला जाएगा। फिर बुद्धि नहीं चलेगी, सिरज़ोरी करेगी, यह सारे बुद्धि के नखरे हैं!

यह ज्ञान ऐसा है कि कुछ पूछना ही नहीं पड़े। एक शब्द भी पूछना पड़े ऐसा यह ज्ञान नहीं है।

हमारी आज्ञा में रहोगे तो काम बन जाएगा न! और अगर कुरेद-कुरेदकर ज़्यादा उलझनें पैदा करोगे, तो क्या होगा?

आज्ञा में नहीं रहा जाता हो तो प्रतिक्रमण करना पड़ता है। घर से तय करके निकलना है कि आज्ञा में ही रहना है, फिर नहीं रहा जाए तो तुरंत प्रतिक्रमण कर लेना है। ऐसा करते-करते छः महीनों में या बारह महीनों में भी राह पर आ जाएगा, फिर हमेशा के लिए राह पर आ जाएगा।

समत्व में आना, वह सामायिक

अब आप समभाव से *निकाल* करन` की आज्ञा का पालन करो, उसे ही सामायिक कहा है। समभाव में रहना, वह सामायिक और विषमभाव में रहना, वह संसार।

उदाहरण के तौर पर बेटा अपनी माँ को बड़ी-बड़ी गालियाँ दे रहा हो, उस घड़ी बाप ये सहन नहीं कर पाता, किन्तु सामायिक में बैठा है इसलिए मन में ये तय रहता है कि, 'अभी सामायिक में बैठा हूँ इसलिए मुझे विषमता नहीं करनी है।' अगर ऐसी सामायिक करता हो तब तो काम ही बन जाए न! अपने महात्माओं को (भीतर) ऐसा रहता है, यों सामायिक जैसी समता रहती है, इसमें कोई गुंजाइश नहीं है!

सामायिक का वास्तविक अर्थ यह है कि, विषमभाव नहीं होने दें, किसी भी कारणवश! सम नहीं रहे, पर विषम नहीं होने दें, उसे सामायिक कहते हैं। बेटा अपनी माँ को गालियाँ दे रहा हो, बाप ने सुना फिर भी विषमभाव नहीं हो। आवेश तो रहता है लेकिन उसे सम कर दे, जैसे कि कुछ तोलते समय एक पलड़े में ज़्यादा हो तो दूसरे में और थोड़ा डालो, फिर इसमें ज़्यादा हो गया तो उसमें डाला,

लेकिन समान कर देते हैं। ऊपर-नीचे या कम ज़्यादा नहीं रखते।

प्रतिक्रमण-सामायिक में क्या फ़र्क़?

प्रश्नकर्ता : अपने प्रतिक्रमण और सामायिक में क्या कनेक्शन (संबंध) है?

दादाश्री : प्रतिक्रमण तो अतिक्रमण हुआ हो उसका करना पड़ता है। आपका व्यवहार वह क्रमण है और ज़्यादा बोल दिया वह अतिक्रमण है। फिर आपको चंदूभाई से कहना है कि 'अतिक्रमण क्यों किया? इसलिए प्रतिक्रमण करो।' अतिक्रमण हो जाए उस पर प्रतिक्रमण करना है।

मैंने आपको एक घंटे के लिए जो ज्ञानविधि करवाई न, उसे सामायिक कहते हैं। सिर्फ अध्यात्म संबंध में एक ही ध्यान में रहना, उसे सामायिक कहते हैं। ऐसी सामायिक मनुष्य से पूर्णरुप से अच्छी हो नहीं पाती। ऐसा तो, ज्ञानीपुरुष पाप धो दें तभी हो सकता है जब तक पाप नहीं धुले हों, तब तक कोई फ़ायदा नहीं है।

आत्मा की सच्ची सामायिक करो तो ही फ़ायदा होता है। 'आत्मा' होकर (बनकर) एक बार 'आत्मा' बोला यानी कल्याण हो गया। आत्मा होकर बोलना है। आपको ऐसा लगे कि ''मैं 'आत्मा' बन गया'', उसके बाद बोलना है। एक ही मिनट के लिए यदि 'आत्मा' बन जाओ तो फिर बहुत हो गया!

सामायिक अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का भान। पाँच आज्ञा में निरंतर सामायिक रहता है। समभाव से *निकाल* करना वह पहला सामायिक। और सहजदशा में, स्वाभाविक रहना वह हमारे जैसा सामायिक। ऐसा तो आपको भी थोड़ा बहुत रहता है।

सामायिक की महत्ता क्या?

प्रश्नकर्ता : अपने अक्रम मार्ग में सामायिक की क्या महत्ता है?

दादाश्री : हम लोगों को सारा दिन सामायिक ही होता है, सामायिक से भी अधिक होता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का लक्ष्य, उसे सामायिक कहते हैं। और वह भी सच्चा सामायिक। सारा दिन सामायिक रहता है।

'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा जिसे एक घंटे के लिए रहा, वही सामायिक। समभाव से *निकाल* करना वह सामायिक, रिलेटिव और रियल देखा वह भी सामायिक। हमारे पाँच वाक्य (आज्ञा) वह सामायिक स्वरूप ही हैं!

प्रश्नकर्ता : क्रमिक मार्ग में तो पुणिया श्रावक का सामायिक सबसे ऊँचा कहलाता है?

दादाश्री : हाँ, वह तो अपना ही यह सामायिक! आप सुबह टहलने निकलो और बाहर की आँखों से गाय दिखे और अंदर की आँखों से शुद्धात्मा दिखे, वही पुणिया श्रावक का सामायिक था। इसलिए मैं आपसे कहता हूँ न, आपको पुणिया श्रावक का सामायिक दिया है, प्योर (शुद्ध) सामायिक। अब यदि आपको भोगना आया तो भोगो। ऐसा सामायिक इस काल में प्राप्त हो सके ऐसा है। लाभ नहीं होता तो भूल आपकी है न!

रिलेटिव और रियल-दोनों देखते देखते देखते उसका उपयोग बराबर रखे, इसे भगवान ने शुद्ध उपयोग कहा। ऐसा शुद्ध उपयोग यदि एक *गुंठाणा* (गुणस्थानक) के लिए रहे न तो पुणिया श्रावक के सामायिक के समान है। तो अब आप लाभ उठाना। कर सकें तब तो अवश्य लाभ उठाना।

भीतर मन चाहे कितना ही उकसाए, फिर भी कहना है कि 'आप अभी चूप रहो, एक घंटे के बाद आना, जिसे आना हो वे आना।' भीतर में, जो आनेवाले होते हैं न, शोर मचानेवाले होते हैं, उनसे कहना है, 'चूप, अभी एक घंटे के लिए बंद है, हमारा सामायिक चल रहा है, अभी मत आना। अंदर होम डिपार्टमेन्ट में घुसने का अधिकार किसीको भी नहीं है, फ़ॉरिन में

रहो, हम एक घंटे के बाद होम डिपार्टमेन्ट से बाहर निकलें तब देखेंगे', इसलिए फिर अपने आप बंद हो जाते हैं। हम ऑर्डर (आदेश) दें उसके अनुसार बरतते हैं। क्योंकि वे सारी वस्तुएँ निर्जीव हैं लेकिन सचेतन बनी हुई है, सचेतन भाव को पाया है। पुणिया श्रावक का सामायिक घंटे भर के लिए करना, तो सबकुछ खाली होकर चला जाएगा!

आत्म सामायिक

यह सामायिक तो आत्म सामायिक कहलाता है। और व्यवहार सामायिक यानी क्या? मन का सामायिक, मन को स्थिर करने का सामायिक। ये बाहर लोग (जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया हो) जो सामायिक करते हैं, वह मन को स्थिर करने का सामायिक है। और वो भी मन पूरी तरह से स्थिर हो गया तो उत्तम है। और यहाँ तो मन की बात ही नहीं है न! यह तो आत्म सामायिक। यह सारा पुणिया श्रावक का सामायिक है!

इसे वर्ल्ड का आश्चर्य कहते हैं! एक घंटे तक पुणिया श्रावक का सामायिक, श्रेणिक राजा का राज्य दलाली में चला जाए, ऐसे इस एक घंटे की कितनी क़ीमत होगी! इस दादा ने आपको क्या दिया है ये आपकी समझ में आ गया न!

अद्‌भुतता, ज्ञानीपुरुष की

अभी मेरी हाज़िरी में (संसार का) सबकुछ भूल गए हो या नहीं भूले? इसे सामायिक कहते हैं। यहाँ पर संसार बिल्कुल भी नहीं होता। यहाँ तो आत्मा और परमात्मा दो ही बातें हैं। सबकुछ भूल गए वही सबसे बड़ा सामायिक। चाहे और कुछ भी नहीं आता हो फिर भी यहाँ आकर बैठे रहना। थोड़ी देर के लिए, घंटे भर के लिए भी यहाँ बैठकर जाओ तो भी देखना, कितने सारे पाप धुल जाएँगे। सारे पाप भस्मीभूत हो जाएँगे। सामायिक से पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। यह ज्ञानीपुरुष की अद्‌भुतता है।

इसलिए, अगर तुम्हें संसार भोगने की, भौतिक सुखों की इच्छाएँ होती हैं और अगर पाँच-छः हज़ार जन्म भोगने हों, तो दादा के पास मत आना और अगर कहीं दादा को मिल भी जाओ तो ज्ञान मत लेना। वर्ना फिर यदि तुम इसमें से (ज्ञान में से) छूटना चाहो तो, भी नहीं छूट पाओगे, मोक्ष में जाना ही पड़ेगा। वैसे तो ऐसा मूर्ख कोई होता नहीं, लेकिन शायद हो भी, इसलिए मैं पहले से ही कह देता हूँ कि भाई, सावधान रहना। बाद में अगर तुम कहो कि, मुझे अब इन पंद्रह जन्मों की बाड़ में से छुड़वाओ, तो नहीं छूट पाओगे। क्योंकि ज्ञानी का सिक्का है, कोई मिटा नहीं सकता, काट नहीं सकता!

ज्ञानी मतलब लाइसन्स लिए हुए व्यक्ति कहलाते हैं। उनके पास पूरे वर्ल्ड का लाइसन्स होता है। जहाँ देव गण सुनने आते हैं, ऐसा यह विज्ञान है। यह परमहँस की सभा कहलाती है। जहाँ आत्मा और परमात्मा के अलावा और कोई बातें नहीं हैं, संसार संबंधी बातें नहीं होती, लेकिन धर्मध्यान के साथ है। अपना अक्रम है न!

अब बस, काम निकाल लो

यह तो आसान मार्ग है। चाबियों से तुरंत ही ताले खुल जाते हैं! किसी काल में भी ऐसा संयोग नहीं मिलेगा, यह तो अक्रम मार्ग है! इक्सेप्शनल केस (अपवादात्मक मार्ग) है! और ग्यारहवाँ आश्चर्य है! ऐसे में काम निकाल लेना। ऐसे प्रतिक्रमण से जीवन भी सुंदर जाता है और मोक्ष मिलता है!

इसलिए अभी काम निकाल लेने जैसा है। इसलिए हम कहते हैं न कि, काम निकाल लो, काम निकाल लो, काम निकाल लो! कहने का भावार्थ इतना ही है कि ऐसा किसी काल में भी नहीं आता और (आज) आया है, तो अपना सर्वस्व लगाकर काम निकाल लो!

जय सच्चिदानंद

'ज्ञानी' के परिचय से, अनंत शक्तियाँ व्यक्त होती है

प्रश्नकर्ता : आत्मा में अनंत शक्तियाँ हैं क्या?

दादाश्री : हाँ। लेकिन वे शक्तियाँ 'ज्ञानीपुरुष' के माध्यम से प्रकट होनी चाहिए। जैसे कि जब आप स्कूल में गए थे, तब वहाँ पर सिखाया था न? आपका ज्ञान तो था ही आपके अंदर, लेकिन वे प्रकट कर देते हैं। उसी प्रकार 'ज्ञानीपुरुष' के पास आपकी खुद की शक्तियाँ प्रकट हो सकती हैं। अनंत शक्तियाँ हैं, लेकिन वे शक्तियाँ ऐसे के ऐसे दबी हुई पड़ी हैं। वे शक्तियाँ हम खुली कर देते हैं। जबरदस्त शक्तियाँ दबी हुई हैं! वे सिर्फ आपमें अकेले में नहीं हैं, जीव मात्र में ऐसी शक्तियाँ हैं, लेकिन क्या करें? यह तो लेयर्स पर लेयर्स (आवरण) डाले हुए हैं सारे!

प्रश्नकर्ता : आत्मा की शक्ति और शारीरिक शक्ति, इन दोनों में कोई संबंध है क्या?

दादाश्री : इन दोनों की शक्तियाँ अलग ही हैं।

प्रश्नकर्ता : वे दोनों एक-दूसरे पर असर डालते हैं?

दादाश्री : डालते ही हैं न! इस शारीरिक शक्ति के कारण तो वह आत्मा की शक्ति बंद हो जाती है। शारीरिक शक्ति अधिक होती है तो पाशवता बढ़ती है।

प्रश्नकर्ता : और आत्मा की शक्ति अधिक हो तो?

दादाश्री : पाशवता कम होती है और मनुष्यपन उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आत्मा की शक्ति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को क्या प्रयत्न करना चाहिए?

दादाश्री : आत्मा की शक्ति अंदर है ही। आत्मा की शक्ति, वह तो परमात्मापन की शक्ति है। बाकी उस परमात्मा में एक सेका हुआ पापड़ तोड़ने की भी शक्ति नहीं है और यों अनंत शक्तियों के वे मालिक हैं!

प्रश्नकर्ता : हमें तो इन सबका मेल नहीं बैठता।

दादाश्री : वह मेल बैठना ही चाहिए। जब तक मेल नहीं बैठता न, तब तक समझने में फ़र्क़ है ज़रा! यदि मेल नहीं बैठे न, तो वह ज्ञान ही नहीं है, जब अज्ञान हो, तभी मेल नहीं बैठता। वर्ना मेल बैठना ही चाहिए, परन्तु उसके लिए थोड़ा 'टाइम' निकालकर हमें परिचय करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : किस तरह से?

दादाश्री : यहाँ साथ में बैठकर, ज़रा 'टाइम' निकालकर, विशेष रूप से बैठकर 'ज्ञानीपुरुष' से परिचय करना पड़ेगा!

आत्मा की अनंत ज्ञानशक्तियाँ हैं, एकाध-दो ज्ञानशक्तियाँ हैं, ऐसा नहीं है। ये अनंत ज्ञानशक्तियाँ हैं, उसके आधार पर तो ज्योतिष ज्ञान, वकालत का ज्ञान, डॉक्टरी ज्ञान, ये सारा ज्ञान अनावृत हुआ है। हर एक के अलग-अलग 'सब्जेक्ट्स' होते हैं, वे सभी ज्ञान अनावृत हो जाएँ, इतनी सारी ज्ञानशक्तियाँ हैं! यानी आत्मा अनंत शक्ति का धनी है! अनंत ज्ञान शक्ति हैं और अनंत वीर्य शक्तियाँ हैं!! बहुत ग़ज़ब की शक्ति के मालिक हैं, ऐसे ये परमात्मा हैं!!!

(परम पूज्य दादाश्री की हिन्दी आप्तवाणी-8 में से संकलित)

दादाई जग कल्याण मिशन - सत्संग हाइलाइट्स

१९ से २२ जून : केनेडा में टोरन्टो में योजित हुए सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान १५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि के समय अचानक आए हुए आँधी-तूफान के कारण बहुत से मुमुक्षु पहुँच नहीं पाएँ। स्थानिक महात्माओं के लिए विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। जिसमें अब तक कभी भी मौका नहीं मिला हो, ऐसे महात्माओं ने प्रश्न पूछें और खुद के अनुभव कहें। पूज्यश्री का इतना करीबी सान्निध्य मिलने से महात्मा आनंदविभोर हो गएँ। ज्ञान लिए हुए नए महात्माओं के लिए आप्तपुत्र के द्वारा फोलोअप सत्संग हुआ।

२३ से २५ जून : प्रथम बार अमेरिका के मिनीआपोलिस शहर में योजित हुए सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान ६५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि के अगले दिन आप्तपुत्र द्वारा फोलोअप सत्संग हुआ।

२३ से २६ जून दौरान राजकोट त्रिमंदिर में ब्रह्मचर्य में रुचि रखनेवाले अपरिणीत भाइयों के लिए २ दिन की शिविर और २ दिन की यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें ३२५ युवानों ने हिस्सा लिया। शिविर के दौरान वीडियो सत्संग, आप्तपुत्रों द्वारा ग्रुप डिस्कशन, सामायिक, प्रेज़ेन्टेशन, प्रार्थना-आरती ऐसे विविध कार्यक्रम योजित किए गएँ।

२९ जून से ४ जूलाई : अमेरिका के टेक्सास राज्य के डल्लास शहर में पूज्यश्री दीपक भाई के सान्निध्य में छह दिवसीय गुरुपूर्णिमा महोत्सव कार्यक्रम आयोजित हुआ। लगभग २२०० महात्माओं ने इस महोत्सव में भाग लेकर कार्यक्रम का भरपूर आनंद उठाया और अपनी ज्ञान-जागृति में अभिवृद्धि की। इस बार सेवा-परोपकार, व्यवस्थित का उपयोग-सत्संग में और व्यवहार में, महात्मा-महात्मा के बीच प्रेम-अभेदता, ब्रह्मचर्य जैसे विषयों पर सत्संग हुआ। ३२५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। हिन्दी में भाषांतरित 'गुरु-शिष्य' और बच्चों के लिए 'वेर डज गॉड लीव' पुस्तकों का विमोचन हुआ। सभी महात्माओं ने बारी-बारी से दादाजी का पूजन किया और दर्शन किएँ। अगले वर्ष जेक्सनविल में गुरुपूर्णिमा के आयोजन की घोषणा की गई।

३ जुलाई के रोज़ गुजरात के ४० और भारत के अन्य राज्यों के १५ सत्संग सेन्टरों में परम पूज्य दादा भगवान की गुरुपूर्णिमा अति उल्लास के साथ मनाई गई। जिसमें महात्माओं ने सूक्ष्म स्वरूप से पूर्ण रूप से हाज़िर दादा भगवान के पास मोक्षमार्ग के लिए शक्तियाँ माँगी और प्रार्थना-विधि, आरती, किर्तनभक्ति, पद गुंजन, गरबा, सत्संग वगैरह का लाभ लिया। इस दिव्य अवसर पर हर एक सेन्टर में परम पूज्य दादा भगवान की गुरुपूर्णिमा के लिए विशेष रूप से तैयार की गई वीडियो सी.डी. पूज्य दिपकभाई के संदेश के साथ दिखाई गई।

५-६ जुलाई : गुरुपूर्णिमा दौरान सेवा में जुड़े हुए २५० सेवार्थीओं के लिए २ दिन की स्पेशीयल रिट्रीट ऑक्लाहोमा स्टेट के ब्रोकन बो में योजित की गई। जिसमें पूज्यश्री ने महात्माओं की अक्रम बोट चलाई। मानो सभी को महाविदेह क्षेत्र में लेकर जा रहे हों ऐसा आनंद महात्माओं ने बोटिंग के दौरान अनुभव किया। गरबा, भक्ति, सत्संग जैसे कार्यक्रमों द्वारा पूज्यश्री के साथ अनुपम आनंद शामिल महात्माओं ने प्राप्त किया।

७ से ९ जुलाई : अमेरिका के फिनिक्स शहर में योजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान १५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि से पहले और बाद में आप्तपुत्र द्वारा नए महात्माओं के लिए सत्संग हुआ।

७-८ जुलाई को अडालज त्रिमंदिर में परिणीत भाइयों के लिए २ दिन की शिविर हुई, जिसमें १२०० महात्माओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। शिविर दौरान आप्तपुत्रों द्वारा दो सेशन दौरान सभी महात्माओं के लिए तथा दो सेशन दौरान अलग-अलग ग्रुप में सत्संग हुए। रात्रि सेशन दौरान 'संगबल' विषय पर वीडियो प्रेज़ेन्टेशन दिखाया गया। शिविर के अंत में महात्माओं ने अपने सुंदर अनुभव कहें।

८ जुलाई के दिन पूज्य नीरू माँ के ४५वे ज्ञान दिवस पर अडालज त्रिमंदिर संकुल में प्रभात फेरी के बाद सत्संग होल में सामूहिक प्रार्थना-विधि, आरती जैसे कार्यक्रम हुएँ। उसके बाद पूज्य नीरू माँ की विशेष वीडियो फिल्म प्रदर्शित

की गई। रात को पूज्य नीरू माँ की समाधि पर किर्तनभक्ति और पूज्य नीरू माँ के द्वारा रचित पदों की भक्ति का कार्यक्रम हुआ।

१० से १२ जुलाई : अमेरिका के वेस्ट कोस्ट के १७५ महात्माओं के लिए दुनिया के सात कुदरती आश्चर्यों में से एक ऐसे ग्रान्ड केन्योन में २ दिन की विशेष रिट्रीट योजित की गई। पूज्यश्री के साथ महात्माओं ने इनफार्मल सत्संग और फोटो सेशन में हिस्सा लेकर अमूल्य आनंद उठाया।

१४-१५ जुलाई : अमेरिका के लोस एन्जलस में सत्संग-ज्ञानविधि दौरान 300 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जिनमें से 80 प्रतिशत मुमुक्षु अपने रिश्तेदार या मित्रों के कहने से आए थे। दादाश्री कहते थे कि यह ख्याति का मार्ग है, प्रख्याति का नहीं। लगता है वह बात आज सार्थक हो रही है।

हिन्दी भाषा में प्रकाशित हुई दादाश्री की नई पुस्तकें

1) आप्तवाणी-८ 2) गुरु-शिष्य

बच्चों के लिए हिन्दी भाषा की पुस्तकें

1) भगवान कहाँ रहते है ? 2) टुर टु महाविदेह

3) दादा भगवान - चित्रवार्ता 1 4) दादा भगवान - चित्रवार्ता 2 5) दादा भगवान - चित्रवार्ता 3

'अक्रम एक्सप्रेस' मेगझीन अब से हिन्दी भाषा में भी

मई २०१२ से हर महिने 'अक्रम एक्सप्रेस' मेगझीन हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके अलावा यह मेगझीन सामान्यत: 7 से 12 साल के बच्चों के लिए है तथा गुजराती और अंग्रेजी में भी प्रकाशित होता है। 'अक्रम एक्सप्रेस' की सदस्यता आप आपके नजदीकी सेन्टर पर या अडालज त्रिमंदिर पर संपर्क कर के प्राप्त कर सकते है। सदस्यता शुल्क आप मनी आर्डर अथवा डिमान्ड ड्राफ्ट 'महाविदेह फाउन्डेशन' (पेयेबल अहमदाबाद) के नाम का बनवा कर अडालज त्रिमंदिर के पते पर भेज सकते है।

Subscription :	**Yearly Subscription** -	**India**: 125 Rupees	**USA**: 15 Dollars	**UK**: 10 Pounds
	5 Years Subscription-	**India**: 550 Rupees	**USA**: 150 Dollars	**UK**: 100 Pounds

दादावाणी के सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को दादावाणी विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे प्राप्त पत्रिका पर अपना नाम, पता, पीनकोड (झीपकोड) आदि जाँच कर लें, जो दादावाणी पत्रिका के कवर के उपर लिखा हुआ रहता है। यदि उसमें कोई भूल हो तो हमें पत्र से (अडालज त्रिमंदिर के पते पर) या इ-मेइल से dadavani@dadabhagwan.org सूचित करें।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, **अहमदाबाद (दादा दर्शन):** (079) 27540408,
वडोदरा (दादा मंदिर): (0265)2414142, **राजकोट त्रिमंदिर:** 9274111393, **भूज त्रिमंदिर:** (02832) 290123,
गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, **मुंबई:** 9323528901, **दिल्ली:** 9310022350, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 033-32933885
यु.के.: +44-7956476253, **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1-877-505-3232, **आस्ट्रेलिया:** +61 421127947, **केन्या:** +254 722722063

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

भोपाल **दिनांक :** 23 अगस्त, **समय:** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425024405
स्थल : जनक विहार कोम्पलेक्ष, मालविया नगर, एयरटेल ओफिस के सामने, भोपाल.

ग्वालियर **दिनांक :** 24 अगस्त, **समय:** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8871555208
स्थल : मानस भवन, फूल बाग, ग्वालियर.

आगरा **दिनांक :** 25 अगस्त, **समय:** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9319128468
स्थल : सरस्वती विद्या मंदिर, बी-1, कमलानगर, आगरा.

गुड़गाँव **दिनांक :** 25 अगस्त, **समय:** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9810307602
स्थल : सिद्धेश्वर स्कूल, गुरुद्वारा रोड, सब्जी मंडी के पास, गुड़गाँव.

दिल्ली **दिनांक :** 26 अगस्त, **समय:** सुबह 10-30 से 12-30 **संपर्क :** 9811279979
स्थल : लौरेल हाई-स्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा, दिल्ली.

गाजियाबाद **दिनांक :** 26 अगस्त, **समय:** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9966738972
स्थल : कोनार्क एन्क्लेव, ई-ब्लोक सेन्ट्रल पार्क, ई-ब्लोक, सेक्टर-17, वसुंधरा, गाजियाबाद.

मथुरा **दिनांक :** 26 अगस्त, **समय:** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9359488359
स्थल : स्वामी विवेकानंद स्कूल, 5, शांतिनगर, आचार्यनगर के सामने, वेटरनरी कोलेज, चुंगी, मथुरा.

बरेली **दिनांक :** 27 अगस्त, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9837387422
स्थल : उत्तर रेल्वे मनोरंजन सदन, बरेली जंक्शन के सामने, बरेली.

मेरठ **दिनांक :** 27 अगस्त, **समय:** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9410607553
स्थल : पी.पी.पी. कोन्फरन्स होल, दास मोटर के पास, अबु लेन, मेरठ.

सोनीपत **दिनांक :** 28 अगस्त, **समय:** दोपहर 2 से 4 **संपर्क :** 9818229870
स्थल : जैन त्यागी भवन, एल.आई.सी ओफिस के सामने, सेक्टर-15, सोनीपत.

लखनऊ **दिनांक :** 28 अगस्त, **समय:** रात 7-30 से 9-30 **संपर्क :** 8090177881
स्थल : राधा क्रिष्ना मंदिर, चित्रगुप्त नगर, आलम बाग, मानक नगर स्टेशन रोड, लखनऊ.

कुरुक्षेत्र **दिनांक :** 29 अगस्त, **समय:** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9671868450
स्थल : श्री जयराम विद्यापीठ, ब्रह्मा सरोवर के पास, कुरुक्षेत्र.

कानपुर **दिनांक :** 29 अगस्त, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9452525981
स्थल : अन्नपुर्णा गेस्ट हाउस, ई-ब्लोक, नीरंकारी भवन चौराहा, गोविंद नगर, कानपुर.

कानपुर **दिनांक :** 30 अगस्त, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9336116426
स्थल : श्री कोठारी गुजरात भवन, नयागंज, कानपुर.

लुधियाणा **दिनांक :** 30 अगस्त, **समय:** शाम 7 से 9 **संपर्क :** 9888821088
स्थल : कम्युनिटी सेन्टर सावन विहार, पुलीस कोलोनी से भामीया की ओर, सरकारी प्राईमरी स्कूल के सामने, लुधियाणा.

जलंधर **दिनांक :** 31 अगस्त, **समय:** दोपहर 3-30 से 6-30 **संपर्क :** 9814063043
स्थल : श्री गीता मंदिर, मोडेल टाउन, जलंधर.

इलाहाबाद **दिनांक :** 31 अगस्त, **समय:** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9795063637
स्थल : हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग संगीत समिति के पास, कमला नेहरु रोड, हनुमान मंदिर, सिविल लाईन, इलाहाबाद.

चंदीगढ़ **दिनांक :** 1 सितम्बर, **समय:** शाम 7 से 9 **संपर्क :** 9872188973
स्थल : कम्युनिटी सेन्टर, सेक्टर 20-अे, सरकारी अस्पताल के पास, चंदीगढ़.

बनारस **दिनांक :** 1 सितम्बर, **समय:** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9554958432
स्थल : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, बी 20/46 भेलुपुरा क्रोसींग के पास, भेलुपुरा, बनारस.

हरिद्वार **दिनांक :** 2 सितम्बर, **समय:** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9719415074
स्थल : गुर्जर धर्मशाला, तहसील के पास, ज्वालापुर, हरिद्वार.

गोरखपुर **दिनांक :** 2 सितम्बर, **समय:** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9161659852
स्थल : सरस्वती शीशु मंदिर, महावीरपुरम, रेल्वे क्रोसींग के पास, शास्त्री नगर, गोरखपुर.

Pujya Deepakbhai's East Africa & Dubai 2012 Satsang Schedule

DATE	DAY	VENUE	PROGRAM	FROM	TO	VENUE	CONTACT
24-Oct	Wed	Kenya	Aptaputra Satsang	8.00 PM	10.00 PM	BROOK HOUSE SCHOOL Magadi Road, Langata, Near Nairobi National Park, Nairobi, Kenya.	+254 (0)733 612 040
25-Oct	Thu	Kenya	Satsang	8.00 PM	10.00 PM		+254 (0)733 872 387
26-Oct	Fri	Kenya	Brookhouse Shibir	9.30 AM	6.00 PM		
27-Oct	Sat	Kenya	Brookhouse Shibir	9.30 AM	6.00 PM		
27-Oct	Sat	Kenya	**GNAN VIDHI**	4.00 PM	8.00 PM		
28-Oct	Sun	Kenya	Brookhouse Shibir	9.30 AM	6.00 PM		
30-Oct	Tue	Kenya	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.00 PM	SSHU HALL Lakshmi Narayan Temple, Ogada Street, Kisumu, Kenya.	+254 (0)774 154 100
31-Oct	Wed	Kenya	Satsang	7.00 PM	9.00 PM		
1-Nov	Thu	Kenya	**GNAN VIDHI**	5.00 PM	9.00 PM		
2-Nov	Fri	Uganda	Aptaputra Satsang	8.30 PM	10.30 PM	SPEKE RESORT, Munyonyo, Kampala, Uganda.	+256 (0)712 992 272
3-Nov	Sat	Uganda	Satsang	8.30 PM	10.30 PM		
4-Nov	Sun	Uganda	**GNAN VIDHI**	3.30 PM	7.00 PM		
7-Nov	Wed	Dubai	Satsang	7.00 PM	10.00 PM	DHOW PALACE HOTEL, Behind Standard Chartered Bank, Kuwait Street, Bur Dubai, Dubai, UAE.	+971 (0)557 316 937
8-Nov	Thu	Dubai	**GNAN VIDHI**	5.00 PM	10.00 PM		+971 (0)501 364 530
9-Nov	Fri	Dubai	Mahatma Only Shibir (UAE)	9.30 AM	6.00 PM	**TBA**	
10-Nov	Sat	Dubai		9.30 AM	6.00 PM		
11-Nov	Sun	Dubai		9.30 AM	6.00 PM		

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'सोहम'** पर हर रोज़ दोपहर १-३० से २, शाम ६-३० से ७ (रिपीट) (हिन्दी में)

✦ **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० और दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० और शाम ५ से ५-३० (गुजराती में)

✦ **'डीडी-सप्तगिरि'** पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (तेलुगु में)

USA ✦ **'TV Asia'** पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)

USA-UK ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)

Europe ✦ **'वीनस'** (स्काय प्लेटफार्म-चेनल 805) पर हर रोज़ रात १० से ११ (हिन्दी में)

✦ **समग्र विश्व में** (भारत और यु.एस.ए. के अलावा) **सोनी टीवी** पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'दूरदर्शन'** पर हर बुध-गुरु-शुक्र सुबह ९ से ९-३० (हिन्दी में) - **नई दृष्टि, नई राह**

✦ **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४५ (हिन्दी में)

✦ **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)

✦ **'डीडी-सह्याद्रि'** पर सुबह ७-३० से ८ सोम से शनि (मराठी में)

✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० और शाम ८-३० से ९ (गुजराती में)

✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **'SAHARA ONE'** पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)

USA-UK ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

पर्युषण पर्व पारायण - दि. १२-१९ सितम्बर तथा दर्शन - दि. २० सितम्बर २०१२

पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-८ और क्लेश रहित जीवन (गुजराती) किताबों का वाचन और उन विषयों पर सत्संग पारायण होगा। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी।

दि. **२० सितम्बर** (गुरु) सुबह 9 बजे - **दर्शन का विशेष कार्यक्रम**

दि. **२२ सितम्बर** (शनि), शाम ४-३० से ७-**सत्संग** तथा **२३ सितम्बर** (रवि), दोपहर ३-३० से ७- **ज्ञानविधि**

सूचना : १) यदि आप इस पारायण में भाग लेना चाहते हो, तो कृपया अपना रजिस्ट्रेशन दि. **२६ अगस्त २०१२** तक अपने नज़दिकी सत्संग सेन्टर पर अवश्य करवाएँ। यदि आपके नजदिकी क्षेत्र में कोई सेन्टर नहीं है, तो आप अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग के फोन नं. **079-39830400 (सुबह 9 से शाम 7)** पर रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

२) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ।

३) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो साथ लाएँ। किसी भी प्रकार की कीमती चीजें साथ में न लाएँ।

४) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

बेंगलोर

दि. **२१ अगस्त** (मंगल), शाम ६-३० से ९ - **सत्संग**

दि. **२२ अगस्त** (बुध), शाम ६ से ९ - **ज्ञानविधि**

स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी.रोड, बेंगलोर-२. **संपर्क :** 9590979099

औरंगाबाद

दि. **६ अक्तूबर** (शनि) - शाम ६ से ८-३० - **सत्संग**

दि. **७ अक्तूबर** (रवि), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : संत एकनाथ रंग मंदिर, उस्मानपुरा, औरंगाबाद. **संपर्क :** 8308008897

जयपुर

दि. **९ अक्तूबर** (मंगल) - शाम ६ से ८-३० - **सत्संग**

दि. **१० अक्तूबर** (बुध), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : उत्सव होल, पी-10, सेक्टर-2, विद्याधरनगर, जयपुर. **संपर्क :** 9461905465

दिल्ली

दि. **१२-१३ अक्तूबर** (शुक्र-शनि)-शाम ६ से ८-३० - **सत्संग**

दि. **१४ अक्तूबर** (रवि), शाम ४-३० से ८ - **ज्ञानविधि**

स्थल : लौरेल हाई-स्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा. **संपर्क :** 9811488263

अडालज त्रिमंदिर : दि. **१३ नवम्बर** - **दिपावली** तथा दि. **१४ नवम्बर** - **नूतन वर्ष (वि.सं.)**

कोलकता	: दि. **३० नवम्बर** तथा **१-२ दिसम्बर २०१२**	: सत्संग व ज्ञानविधि
रायपुर	: दि. **४-५ दिसम्बर २०१२**	: सत्संग व ज्ञानविधि
मुंबई	: दि. **७-८-९ दिसम्बर २०१२**	: सत्संग व ज्ञानविधि

परम पूज्य दादा भगवान का १०५वाँ जन्मजयंती महोत्सव
दि. २३ से २७ नवम्बर, २०१२ के दौरान गुजरात के भावनगर शहर में मनाया जाएगा.

अगस्त २०१२
वर्ष - ७, अंक - १०
अखंड क्रमांक - ८२

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

प्रतिक्रमण जरूरी, आज्ञा पालन न हो उसका

यह ज्ञान मिलने के बाद पाँच आज्ञा में ज्यादा रहना चाहिए। दूसरा कुछ करने जैसा नहीं है। सुबह से तय करना चाहिए कि पाँच आज्ञा में ही रहना है और यदि न रह पाएँ तो रात को प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। तो फिर दूसरे दिन आज्ञा में रह सकते है। फिर आगे (ज्ञान-जागृति) का फोर्स बढ़ता जाएगा। इसलिए मैं ने क्या नियम किया है कि जितना आज्ञा पालन कर सकते हो उतना करो। यदि आपसे पालन न हो सके तो दादा के पास क्षमा माँगो। यह प्रतिक्रमण ही आपको ऊपर ले जाएँगा, टोप पर।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.